मैं और मेरी ज़िन्दगी

बिमला रावर सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक
के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN No :- 978-99-90580-55-6

कर्म-बद्ध-संकल्प

के.बी.एस. प्रकाशन दिल्ली

मुख्य कार्यालय :- 18/91-ए, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007

शाखा कार्यालय :- 26, प्रभात नगर, पीलीभीत रोड, बरेली, उत्तर प्रदेश

शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटकेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301

दूरभाष :- 9871932895, 9868089950

Blogger :- https://kbsprakashan.blogspot.in

e-mail :- kbsprakashandelhi7@gmail.com
kbsprakashan@gmail.com

●

मूल्य : 240.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2021 © बिमला रावर सक्सेना

मद्रक :- कौशिक प्रिन्टर नई दिल्ली

आवरण – बिमला रावर सक्सेना

Book Name : MAIN AUR MERI ZINDAGI
by : BIMLA RAWAR SAXENA

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग या मंचन सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मैं और मेरी ज़िन्दगी

==========

वैसे तो मनुष्य का जीवन अपने आप में ही एक संपूर्ण दस्तावेज़ है अनुभवों का, लेकिन जब इन अनुभवों के साथ जीवन का निष्कर्ष, ज्ञान, भावना और शुभकामनायें मिल जाती हैं, तब हृदय के उद्‌गार किसी मंत्र से कम नहीं रह जाते। ठीक इसी प्रकार से जब बिमला रावर जी की कविताओं से रू-ब-रू हुआ, तब मुझे लगा कि ये घटनायें मेरे सामने प्रत्यक्ष रूप में घट रही हैं।

कवितायें मात्र शब्दों का समुच्चय नहीं होतीं, उनके अंदर समाहित होता है मनोभावों का एक जीवित इतिहास, जीवन के कुछ विशेष पलों का। कविताओं के माध्यम से हम हर्ष, विषाद, मंथन और सुझाव से परिपूर्ण सुन्दर शब्दों से सुसज्जित ऐसी रचनाओं का जब-जब पठन करते हैं, और जब उस धरातल तक पहुँचकर हमारा अंतर्मन उनका पठन-पाठन अथवा वाचन करता है, तब ऐसी कवितायें बिला शक आदमी के मन में अपनी जगह बना लेती हैं।

मेरा मानना है कि कविता बहुत व्यक्तिगत होते हुए भी पाठक उन शब्दों को अंगीकार करता है, तब कुछ पल के लिए वह भी कवि अथवा कवयित्री जैसा हो जाता है। और बिना किसी लाग लपेट के मैं कह सकता हूँ कि ऐसा होना ही कविता की सफलता है। कविता में विभिन्न प्रकार की संरचनाओं का शामिल होना जिसमें हम कविता को अलग-अलग रूपों में बाँधते हैं, वह इतना महत्वपूर्ण नहीं होता, जितना कि कविता के भाव, उनमें निहित संदेश के साथ मन में उपजी हुई भावनाएं होती हैं। इस पुस्तक को पढ़ते हुए कई बार आपको लगेगा कि कविता की किसी भी विधा का पालन नहीं किया गया है, उसके बाबजूद भी इसमें जो भावों का सौंदर्य है, मन की उपस्थिति, और परिस्थितियों के रंग हैं, वे सब मिलकर इन कविताओं को पठनीय और सौंदर्यपूर्ण बना देते हैं।

बिमला रावर सक्सेना अपने जीवन के आठवें दशक में हैं। वह एक तरुणी से गृहणी, अध्यापिका, माँ, दादी आदि का सफर तय करते हुए इस मुकाम पर पहुँची हैं। इन कविताओं में उनका आत्मचिंतन, उनकी मनःस्थिति, जीवन के प्रति उनकी आशाएं, निराशाएं, संवेदनाएं और शुभकामनाएं सभी कुछ मौजूद है। मैं लंबे समय से उनकी कविताओं का पाठक रहा हूँ, श्रोता भी रहा हूँ, और उनका प्रशंसक भी। मेरा ऐसा कहने के पीछे, जो कारण है, उसका प्रमाण इन कविताओं को पढ़ते हुए आपको स्वयं ही हो जाएगा।

क्यों फँसे किसी भी भँवर में हम
सादा सोचें, सादा खायें

तज स्वार्थ और लालच के ग़म
सबके अंदर ख़ुद को पायें

इन पंक्तियों को पढ़ने के बाद, ऐसा लगता है कि जैसे किसी सत्संग का कोई निचोड़ आप देख रहे हों। संपूर्ण जीवन को जीने की एक जो कला कोई भी साधु-सन्यासी, ऋषि हम लोगों को सुनाता है, अपने घंटों के सत्संग में, वह इन चार पंक्तियों में समाहित है। हम सभी जानते हैं कि हमारा यह जीवन एक यात्रा है, और यह यात्रा मात्र हमारे जन्म का टिकट लेने के बाद से हमारे मृत्यु के स्टेशन तक सीमित है इस संसार में। यदि हम इस जीवन की यात्रा को सुखद और दिव्य बनाना चाहते हैं, तब हमारा जीवन यहाँ की मोहमाया, स्वार्थ, लालच से अलग रहना चाहिए। जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण इस प्रकार का होना चाहिए जैसे कि जो व्यक्ति हमारे सामने हैं, उसमें भी मैं ही हूँ। यदि हम इस दुनिया के समस्त प्राणियों को इस प्रकार के दृष्टिकोण से देखने लगते हैं, तो यह पूरा का पूरा संसार हमारा हो जाता है, फिर हमारे जीवन में दूसरों के प्रति प्रेम और सहानुभूति का संचार बहुत ही सरलता से शामिल हो जाता है। जीवन में अभावों से जूझने के लिए सादा जीवन और उच्च विचार का फॉर्मूला, हमारे सभी धार्मिक ग्रंथ मंत्र रूप में देते ही रहे हैं।

क्यों सताते हो मुझे
कुछ पल तो जीने दो मुझे
झूमती इस ज़िन्दगी के
जाम पीने दो मुझे
मैंने चाहा था तुझे
बस ये ख़ता मेरी रही
तू न अपना कह सका
बस यह अदा तेरी रही

इसी तरह से तो हम सब लोगों की ज़िन्दगी गुज़र रही है। लेकिन फिर भी इस ज़िन्दगी का जाम पीने के लिए हम सब आतुर हैं। तरह-तरह से अपनी ज़िन्दगी को बचाने की कोशिशों में हम लगे हुए हैं। जीवन की जितनी भी आपाधापी है, वह सब कहीं न कहीं ज़िन्दगी के कुछ सुख से भरे हुए पलों के आने की आस में। हम लोग जिये जा रहे हैं। और इस सुख को प्राप्त कर लेने की मृगतृष्णा ही इस जीवन को चलाने के लिए शरीर रूपी गाड़ी के अंदर ईंधन का काम करती है। इस सुन्दर और सरल बात को कवयित्री बिमला रावर जी ने बड़ी ही ख़ूबसूरती

से बयान किया है।

शमा जलती रही रात भर
शायद आए सुनहरी सहर

हमारा संपूर्ण जीवन, हम इसी आशा के साथ गुजारते हैं कि आने वाला दिन हमारे लिए कुछ नया, कुछ ख़ूबसूरत, कुछ मनचाहा लेकर आने वाला है। और यही सकारात्मकता हमारे जीवन को दुखों को भूलकर आगे बढ़ाने में हमारी मदद करती है।

सुख-दुख, मिलने-बिछड़ने, आने-जाने और मनचाहा जीवन में नहीं हो पाने की शिकायत हर व्यक्ति को होती है। प्रेम इस जीवन में होने वाली सबसे सुन्दर घटना है, लेकिन इसका दूसरा पक्ष भी है, क्योंकि रात के बाद दिन और दिन के बाद रात का आना तय है। हमेशा जीवन में एक जैसी परिस्थितियाँ नहीं रहतीं। बदलाव प्रकृति का नियम है। आज अपने बगीचे में खिले हुए गुलाब के फूल को देखकर हम लोग ख़ुश हो रहे हैं, हम इस भय से भी ग्रस्त हैं कि कल इसकी ख़ूबसूरती इतनी नहीं रहेगी। जीवन के हर पल में यह प्रकृति हमें सिखा रही है कि जीवन नश्वर है, और इस जीवन के प्रत्येक क्षण का हमें यथासंभव बिना किसी शिकायत आनंद लेना चाहिए। क्योंकि जीवन के प्रति बनाई गई हमारी योजनाएं हमेशा सफल नहीं होती हैं, और अक्सर हमारी योजनाओं का फेल हो जाना, हमें निराशा की ओर धकेल देता है। इस पर विजय पाने का सीधा-सा मंत्र है कि हम लोगों को वर्तमान में जीना चाहिए। लेकिन जब जीवन में पीड़ा के क्षण आते हैं, तब हमारा यह ज्ञान कपूर की तरह वाष्पित हो जाता है। हम अपने जीवन से और जीवन की परिस्थितियों से शिकायत करने लगते हैं।

आज घिरे जब काले बादल
याद तुम्हारी आई

झोंके आए मस्त हवा के
पड़ीं फुहारें मतवाली
मन की कलियाँ राह तकें पर
आए न तुम मन के माली

कविता की पंक्तियों को पढ़ते हुए सहज ही इस बात का अनुभव हो जाता है कि मन अपने जीवनसाथी के विरह में व्याकुल है। फिर हमारा जीवन चाहे कितना भी लंबा क्यों न हो, अगर हमारे साथ हमारा मनचाहा साथी नहीं है, तो

इस जीवन को जीने का मजा जाता रहता है। जीवन में हम सब्र का दामन थाम लेने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

अगर कभी भी किसी मोड़ पर
याद हमारी आ जायेंगी
सुरभित मलयानिल सी यादें
हमें सुवासित कर जायेंगी
स्नेह तुम्हारा वायु रूप में
प्राण वायु हमको दे देगा
और हमारा नेह संदेशा
ले जाकर तुमको दे देगा
इक दूजे के स्निग्ध स्नेह से
अंतरतम तक भीग जायेगा
देव लोक के देवों का मन
मृत्यु लोक पर रीझ जायेगा
बंधन स्नेह स्निग्ध यादों के
जब तक दिल में वास करेंगे
कितनी दूर रहें फिर भी हम
दिल से दिल के पास रहेंगे

कितना गहरा प्रेम है। इस प्रेम को मात्र शब्दों के सहारे से तो कभी नहीं समझा जा सकता, और न ही इस प्रेम को समझने के लिए एक जीवन पर्याप्त है। एक ही जीवन में हम जितने लोगों से प्रेम कर पाते हैं, उतने ही लोगों की चिन्ताएं हमारी हो जाती हैं। हम सब उन चिन्ताओं से बंध जाते हैं, उन लोगों से बंध जाते हैं। हमारे संतपुरुष और ज्ञानी लोग इसी को तो बंधन कहते हैं, लेकिन जो जीवन की उपासना करता है, उसके लिए यह बंधन बहुत ही सुखकारी हैं। जब भी कोई प्रिय किसी को याद कर लेता है, तो इस जीवन का आनंद कितने गुना बढ़ जाता है, यह तो जीवन से प्रेम करने वाला कोई प्रेमी ही बता सकता है।

कहाँ से आ, कहाँ मिलें
मैं और मेरी ज़िन्दगी
करते रहे शिकवे गिले
मैं और मेरी ज़िन्दगी
हर राह पर, हर मोड़ पर

टकराहटें होती रहीं
ज़ख़्म भी रिसते रहे
कराहटें होती रहीं
फिर भी हम साथ-साथ चलते रहे
एक दूजे को खींचते रहे बहलाते रहे

यही तो है हमारे संपूर्ण जीवन का लेखाजोख़ा। व्यक्ति के शब्द अलग हो सकते हैं, लेकिन ज्यादातर लोगों के जीवन के प्रति और ज़िन्दगी के प्रति ऐसे ही अनुभव हैं। इस कविता संग्रह की सभी रचनायें मेरी पूर्व में भी पढ़ी-सुनी हैं, और इन रचनाओं की उत्पत्ति के स्थल को यदि पाठकमन छू लेता है, तो यह समस्त काव्यकर्म उसे अपना-सा लगेगा। यही इन कविताओं की ख़ासियत है, और यही किसी भी रचनाकार की सफलता भी है।

मैं बड़ी बहन बिमला रावर सक्सेना जी को इस काव्य-संग्रह 'मैं और मेरी ज़िन्दगी' के प्रकाशन पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। मैं प्रकृति से यह प्रार्थना करता हूँ कि उनकी लेखनी और उनका स्वास्थ्य सदैव ऊर्जा से भरे रहें। उनका स्नेह आशीष मुझपर सदैव बना रहे।

केदारनाथ 'शब्द मसीहा'
नई दिल्ली

मैं और मेरी ज़िन्दगी

माननीय पाठकगण आपकी सेवा में प्रस्तुत है मेरा नया काव्य-संग्रह 'मैं और मेरी ज़िन्दगी'। यह मानव की ज़िन्दगी के पल-पल, पग-पग, तन-मन-धन से जुड़ी घटनाओं के जोड़-तोड़ का योग है। मैंने ज़िन्दगी में घर-परिवार, समाज, देश, विश्व, प्रकृति, धरती, अंबर, पर्वत, समन्दर, सड़कें, पुल, नदियाँ, जहाँ जो कुछ देखा, वह तो सबकी ज़िन्दगियों से जुड़ा होता है। ख़ुशियाँ, दुख-दर्द, मानसिक, शारीरिक कष्ट सब झेलते हैं, अंतर होता है समय का, किसी को कम और किसी को अधिक सुख-दुख मिलते हैं। मैंने जो कुछ अपने साथ और अपने आसपास देखा, उसका भंडार इस उम्र तक काफ़ी बढ़ चुका था, तो अपना दुख और दूसरों का दुख, सबके सुख-दुख मिलकर एक पुस्तक का रूप धारण कर बैठे। दिल में जमा भंडार दिल की सीधी, सरल, साधारण भाषा में, सोच समझ की भाषा में पुस्तक में छप गया। सहृदय पाठकगण, शेष आप लोग ही पढ़कर बताएँगे। आपके कर कमलों में अर्पित है 'मैं और मेरी ज़िन्दगी', वह ज़िन्दगी जो सबके साथ जुड़ी हुई है, सबके जीवन में कुछ ऐसे मौके आते हैं, जिन्हें सुनकर हम कह उठते हैं कि ऐसा तो मेरे साथ भी हुआ था। यदि मेरी पुस्तक आपके हृदय को स्पर्श कर सकेगी तो मेरा लेखन सफल हो जाएगा।

पुस्तक के प्रारम्भ में प्रसिद्ध लेखक श्री केदारनाथ 'शब्द मसीहा' के विचार मेरी पुस्तक की कविताओं से आपका परिचय करवाते हैं। ज़िन्दगी कुछ लेती है तो बहुत कुछ देती भी है। ऐसा ही वरदान मुझे लगभग बीस वर्ष पूर्व मिला, जब 'शब्द मसीहा' मुझ उम्रदराज दीदी के जीवन में मसीहा बनकर अचानक से मिले। मेरी ज़िन्दगी का बहुत प्रिय रिश्ता जो मेरा कविमित्र, मेरा पथ-प्रदर्शक और मुझे प्यार से दीदी माँ कहने वाला मेरा बंधु है। मेरा आशीर्वाद है कि उन्हें सदैव, सुख, समृद्धि मिलती रहे, माँ सरस्वती का भंडार

उनकी लिखी पुस्तकों के रूप में सदैव भरती रहें। मेरे प्रकाशक संजय 'शाफ़ी' एक विनम्र, परिश्रमी और स्नेही व्यक्तित्व के धनी हैं, उन्हें भी मेरा आशीर्वाद।

बिमला रावर सक्सेना
नई दिल्ली
बुद्ध पूर्णिमा , 26-05-2021

अनुक्रमांक

1. सब एक हैं हम	.....	19
2. तुम न बदलो	.....	20
3. लोग हैराँ हो गए	.....	21
4. कुछ रौशनी है बाक़ी	.....	22
5. बेगानगी	.....	23
6. हृदय की कोर में	.....	24
7. कुछ पल तो जीने दो मुझे	.....	25
8. शून्य और हम	.....	26
9. शमा जलती रही	.....	27
10. शान से जी शान से मर	.....	28
11. ज़िन्दगी और तूफान	.....	29
12. निविड़ तिमिर	.....	30
13. याद तुम्हारी आई	.....	31
14. दूर क्षितिज पर	.....	32
15. लहर का अस्तित्व	.....	33
16. सागर का संदेश	.....	34
17. स्नेह	.....	35
18. खो गई डगर	.....	36
19. कैसे तुम्हें बतायें	.....	37
20. रोने से अगर	.....	38
21. ऐ वतन	.....	39
22. मैं और मेरी ज़िन्दगी	.....	40
23. सहारा नहीं है	.....	41
24. दोनों की नादानी	.....	42
25. ज़िन्दगी चल रही है	.....	43
26. जीने की तड़प	.....	44

27. एक बार आ जाये 45
28. कितने धोखे 46
29. झलक 47
30. काश कोई आता 48
31. चुप्पी की चादर 49
32. प्राणों का दान 50
33. बिसर गया कोई 51
34. तुम्हारी हँसी 52
35. कोई हमको बुलाया करे 53
36. शुक्रिया ज़िन्दगी का 54
37. किरणों की दस्तक 55
38. खुद से ही छल करें 56
39. कोई गुनाह नहीं 57
40. लाखों लगाओ पहरे 58
41. बुलाते हैं उजाले 59
42. दिल कहे तो 60
43. अपनों की कोशिशें 61
44. क्या यही है जीवन 62
45. यादें ले रहीं करवटें 63
46. जब तक जीवन है 64
47. वक़्त की बेज़ुबानियाँ 65
48. इतनी करें इनायत 66
49. झूठी कहानी 67
50. तब बरसीं मेरी आँखें 68
51. दर्द का नाज़ुक तार 69
52. दर्द का अन्दाज़ा 70
53. कुछ मेरे अपने होते थे 71
54. कैसे बतलायें समीकरण 72
55. एक दृष्टि 73

56. जो आज मिल रहा है 74
57. एक लक्ष्य के साथ 75
58. मधुर प्यारी कथायें 76
59. मेरी यादों में 77
60. तुम भी उलझो 78
61. बर्फीली उदासी 79
62. वे सारे ऋण 80
63. ज़िन्दगी ठिठक गई 81
64. कुछ गीत मुझे गा लेने दो 82
65. पल-पल का जोड़ 84
66. खुल गई आँख 85
67. नित नये सफर 86
68. कैसी उदासी छा गई 87
69. जाने कब मिलेंगे हम 88
70. हम नदी के दो किनारे 89
71. भूल जाना यूँ किसी को 90
72. गीत हूँ मैं वह 91
73. मैं अकिञ्चन 92
74. नैन बरसने लगते मेरे 93
75. अनजानी इबारत 94
76. छंद स्वच्छंद हुए 95
77. बूँद पड़ी 96
78. जायें कहाँ तुम बिन 97
79. ज़िन्दगी की अर्थ 98
80. होने का अहसास 99
81. कैसे अलग करूँ 100
82. मुझे निहार लिया 101
83. बह रहा जीवन 102

84. क्या करें हम ज़िक्र 103
85. उम्मीद का दामन 104
86. दिल में कुछ रंग नये 105
87. ज़िन्दगी, मौत और हम 106
88. क्यों कोई 107
89. अमृत वृष्टि से सरसाओ 108
90. क्यों न मीत सबके बन जायें 110
91. अपनों की सोच का अन्तर 111
92. काश दो लोग 112
93. वक़्त की करवटें और चेहरे की सलवटें... 113
94. मौत सिर्फ़ मौत है 114
95. मन के ख़ामोश पंछी 115
96. स्मृतियों में क़ैद कहानियाँ 116
97. धूल की परतों के नीचे 117
98. कैसी हैं ये हैरानियाँ 118
99. सबका मालिक साईं 119
100. प्रकृति खेल रही थी 120
101. चुनता ज़मीर को 121
102. मन की गाँठें खोलो 122
103. कर दो खुद को ही वसीयत 123
104. नफ़रतों के रिश्ते 124
105. हालात मेरे देश के 125
106. ज़िन्दगी ठीक है तू जैसी है 127
107. चिन्ता से दिल को भरो नहीं 128
108. जीवन मूल्य 129
109. गूँज रही सारी अमराई 130
110. सबकी यही कहानी है 131
111. साथ मिला वीरानों का 132

112. ढूँढता हूँ खुद में खुद को 133
113. अकेलेपन का अहसास 134
114. हम न देते हैं न लेते हैं 'दहेज़' 135
115. ज़िन्दगी भर सुलग-सुलगकर 138
116. मन माने सब आपने 139

सब एक हैं हम

तू-तू न कहो मैं-मैं न कहो
बस कहो यही सब एक हैं हम
जब एक प्रभु है सबका पिता
तब क्यों न कहें सब एक हैं हम

न ज़ात-पात का भेद करो
न छुआ-छूत की बात करो
न महल झोंपड़ी की बातें
न ऊँचे-नीचे की घातें

सब द्वेष, ईर्ष्या को तज दें
बस मानव मन्त्र एक जप लें
जब सब में एक प्रभु बसता है
तो रिश्ता एक हुआ सबका

क्या झगड़े और लड़ाई से
कोई कुछ हासिल कर पाया
क्या भँवर बीच फँस कर कोई
अपने साहिल तक जा पाया

क्यों फँसें किसी भी भँवर में हम
सादा सोचें सादा खायें
तज स्वार्थ और लालच के ग़म
सबके अन्दर खुद को पायें

जीवन नैया को सही दिशा
दे कर सुख की गंगा में बहो
बस कहो यही, सब एक हैं हम
तू-तू न कहो मैं-मैं न कहो

ooo

तुम न बदलो

मुद्दतों से सनम मेरी रुसवाइयाँ
तेरी खुशियों का सामान बनती रहीं
मगर आज रुसवा तुझे देखकर
मेरी रुसवाइयाँ भी सिसकने लगीं
तेरे होने से ही, होना मेरे सनम
वरना कैसा फ़र्क़ ज़िन्दगी मौत में
तुझसे बिछड़ें कभी, यह तो सोचा नहीं
तेरे होने से दुनिया महकने लगी

हम नहीं तेरे क़ाबिल बने न सही
तू बना मेरा अपना ये कम तो नहीं
तू ने अपना न समझा ये क़िस्मत मेरी
मैं तुझे पा के हरदम चहकने लगी

तू मेरे पास है, मैं मना लूँ तुझे
तेरा दिल जीत कर मैं रिझा लूँ तुझे
कर जतन कोई अपना बना लूँ तुझे
सोचकर हर समय मैं बहकने लगी

पर ये क्या हो गया
सब बदल क्यों गया
तेरा अहसास ऐसे
चटख क्यों गया
मैं वही रूप तेरा
सदा चाहती

तेरे इस रूप से मैं बिलखने लगी
ऐ सनम आज रुसवा तुझे देखकर
मेरी रुसवाइयाँ भी सिसकने लगीं

ooo

लोग हैरां हो गए

रोते-रोते तेरे ग़म में
जब कभी हम हँस दिए
लोग मुँह में दे के उँगली
देखने हमको लगे

दिल जिगर में बस रहा तू
लोग जानें क्या भला
वो ताज्जुब से हमारी
हर खुशी तकने लगे

आ के सपनों में सताना
ये तेरा अन्दाज़ है
मेरी तन्हाई में गूँजे
बस तेरी आवाज़ है

मुस्कुराए हम ज़रा तो
लोग हैराँ हो गए
उनकी हैरानी से हम भी
कुछ परेशाँ हो गए

अब हमें पागल समझ कर
आजकल डरने लगे
लोग मुँह में दे के उँगली
देखने हमको लगे

ooo

कुछ रौशनी है बाक़ी

ज़ख़्मों से जो किया था,
घायल मेरे जिगर को,
मेरे दिल जिगर में उसकी,
टीसें अभी हैं बाक़ी।
बदक़िस्मती थी मेरी,
तुमने हमें न समझा,
मेरी ज़िन्दगी ने मुझको,
कैसी जगह दग़ा दी।
ये ज़िन्दगी तुम्हारे,
क़दमों में मैं गुज़ारूँ,
मैंने खुदा से इतनी,
बस इल्तिज़ा ही तो की थी।
कभी साथ हम चले थे,
आईं थीं कुछ बहारें,
मेरी ज़िन्दगी में उसकी,
खुशबू अभी है बाक़ी।
दीए जो ज़िन्दगी में,
तुमने कभी जलाए,
मेरी ज़िन्दगी में उनकी,
कुछ रौशनी है बाक़ी।
ज़ख़्मों के दाग़ अब भी हैं धरोहरें तुम्हारी
उन दाग़ों की छुअन ही, है ज़िन्दगी हमारी
ये निशान मेरे दिल के मिट जायें न कभी भी
इनके सहारे से ही मेरी ज़िन्दगी है बाक़ी

○○○

बेगानगी

दिल में छुपे हैं लाख ग़म,
फिर भी हैं मुस्कुरा रहे।
आँखों में आँसू हैं भरे,
होंठों से गुनगुना रहे।

क़हर ख़ुदा का सह लिया,
इन्सां का क़हर कैसे सहें।
मेहर ख़ुदा की नेमतें,
इन्सां का मेहर कैसे सहें।

अपने बेगाने बन गए,
कैसा है यह अजब चलन।
बेगानगी का ये चलन,
होता नहीं है अब सहन।

अन्दर हैं आँधियाँ मगर,
किसको दिखाएँ हाल-ए-दिल।
खोलेंगे अब ज़बां न हम,
होंठ भी लिए हैं सिल।

जीने का मोह छोड़ा है,
दुनिया से मुँह मोड़ा है।
फिर भी है जीना पड़ रहा,
इसने ही मुझको तोड़ा है।

सीने में तूफ़ां उठ रहे,
फिर भी न डगमगा रहे।
दिल में छुपे हैं लाख ग़म,
फिर भी हैं मुस्कुरा रहे।

ooo

हृदय की कोर में

कौन तुम मेरे हृदय की कोर में आकर समाते
कौन अन्तस् के पटल पर चित्र अपना आ बनाते
झूमती मादक पवन जब गूँजता संगीत नभ में
डाल जाते श्रृंखलायें रोक लेते चरण नभ में
मत्त सुरभित वात से दे थपकियाँ मुझको सुलाते
कौन तुम मेरे हृदय की कोर में आकर समाते
झिल्लियों की झनन झन में गुनगुनाते भ्रमर दल में
पिक मयूर मराल केकी और चातक की लगन में
कौन कोयल की कुहुक के निस मुझे आकर बुलाते
कौन तुम मेरे हृदय की कोर में आकर समाते
जब घिरे नभ में तिमिर घन हृदय को कर जायें उन्मन
चपलतायें दामिनी की आ डरायें क्षण प्रतिक्षण
कौन तुम निस्पद गति से आ करुण मन को रुलाते
कौन तुम मेरे दृगों की कोर में आकर समाते
और जब ऋतुराज का साम्राज्य छा जाता धरा पर
सृष्टि रसमय झूम उठती गूँज उठते भृंग लय स्वर
कौन तुम कोमल सुमन की डाल पर मुझको झुलाते
कौन तुम मेरे हृदय की कोर में आकर समाते
मिल रहे हैं इस क्षितिज पर जहाँ धरती गगन
देखकर निस मिलन को मन मेरा हो उठता मगन
कौन तुम जो कनखियों से क्षितिज से मुझको बुलाते
कौन तुम मेरे हृदय की कोर में आकर समाते
गीत और संगीत से भर देते हो धरती का कण-कण
स्वर्गीय संगीत में डूब जाता है मानव का तन-मन
कौन तुम स्वर्गीय संगीत जो मेरे कानों को सुनाते
कौन तुम मेरे हृदय की कोर में आकर समाते

○○○

कुछ पल तो जीने दो मुझे

क्यों सताते हो मुझे
कुछ पल तो जीने दो मुझे
झूमती इस ज़िन्दगी के
जाम पीने दो मुझे
मैंने चाहा था तुझे
बस ये ख़ता मेरी रही
तू न अपना कह सका
बस ये अदा तेरी रही
कुछ शिकायत ही सही
कुछ आज कहने दो मुझे
ये सताना, ये रुलाना
दर्द-ए-दिल देना मुझे
प्यार के बदले में नफ़रत
बस यही आता तुझे
दे दिये जो ग़म उन्हें
चुपचाप सहने दो मुझे
ज़िन्दगी थोड़ी सी है
कट जायेगी ये तो कभी
मैं चली जाऊँगी इक दिन
तोड़कर नाते सभी
बस ज़रा सी जगह देकर
दिल में रहने दो मुझे
तुम न मेरे बन सके
ये तो सितम क़िस्मत का था
तुमसे मिलना बात कर पाना
करम क़िस्मत का था
जो दिए हैं घाव दिल को
वो तो सीने दो मुझे
क्यों सताते हो मुझे
कुछ पल तो जीने दो मुझे
झूमती इस ज़िन्दगी के
जाम पीने दो मुझे

ooo

शून्य और हम

शून्य में भटके बहुत हम
और बढ़ता जा रहा यह शून्य
जितना ही निकलना चाहते हम
शून्य की इन घन-सघन
गहराइयों से
कौन सी राहें
कहाँ मंज़िल
कहाँ हैं रास्ते
और हैं कहाँ पगडंडियाँ
जो मुझे ले जायें
मेरे सपनों की उन हरियालियों में
सुनहरी अमराइयों में
मन कभी जाता है बन
कमज़ोर कितना
और सबमें ढूँढता है
एक अपना
या कभी चाहे बनाना
एक सुन्दर सी
भली तस्वीर
जीवन में भटकती
आड़ी तिरछी तैरती
परछाइयों से

ooo

शमा जलती रही

शमा जलती रही रात भर
शायद आये सुनहरी सहर

एक आशा की लौ को जलाये हुए
अपने दामन से उसको बचाये हुए
कितने अरमान दिल में छिपाये हुए
हसरतों के जनाज़े उठाये हुए
ज़ख़्म सीने पे अपने लगाये हुए
होठों पर मुस्कुराहट सजाये हुए
नाज़ सारे जहां के उठाये हुए
सबको आँखों पे अपनी बिठाये हुए
सबके क़दमों में खुद को बिछाये हुए
रूठे साजन की मेंहदी रचाये हुए
नाचती ही रही रातभर
शमा जलती रही रातभर
शायद आये सुनहरी सहर
एक अरज़ मेरी सुन लो मेरे बाग़बाँ
एक दिन को तो हो जाओ तुम मेहरबाँ
मेरा कोई जहाँ में सहारा नहीं
डूब जाऊँगी मैं है किनारा नहीं
जान जाये रहे मैं तुम्हारी सदा
मेरे दिल जान हैं सब तुम्हीं पर फिदा
ऐसे ख़ामोश क्यों हो ये कैसी अदा
कर न देना कहीं अपने दिल से जुदा
मैं इसी आस में जल रही हूँ सनम
रौशनी तुझको देती रहूँ हर जनम
साथ तेरे हर इक राह पर
शमा जलती रही रातभर
शायद आये सुनहरी सहर

ooo

शान से जी शान से मर

मौत का दिन एक निश्चित है अगर
क्यों नहीं सोते हो दिन भर रात भर

मौत तो बस ज़िन्दगी का एक अटल भविष्य है
ले लिया जिस दिन जनम उस दिवस से दृष्टव्य है

छोड़ देंगे आस सारी मौत के डर से अगर
तो भला कैसे चलोगे ज़िन्दगी की यह डगर

यूँ मरोगे रोज़ दिन में मौत से डर दस दफ़ा
ये तो होगी ज़िन्दगी और मौत दोनों से ज़फ़ा

कायरों सी ज़िन्दगी जीने से भी क्या फायदा
शान से जी ले दिखा दे इक बहादुर की अदा

मौत तो बस एक अगले सफर का आग़ाज़ है
मौत तो बस इक फरिश्ते की मधुर आवाज़ है

तू सदा तैयार रहना एक लम्बे सफर को
शान से जी, शान से मर, शान से कर यह सफर

मौत का दिन एक निश्चित है अगर
क्यों नहीं सोते हो दिन भर रात भर

ooo

ज़िन्दगी और तूफान

चली आ रही मौत दामन पसारे
मेरे दर्दो-ग़म अपने दामन में लेने

करम यह तेरा है मेरी ज़िन्दगी पर
करूँगी किया क्या अभी तक ही मैंने

ये चाहा था घर अपना भी एक होगा
वो गुलज़ार गुलशन चमन एक होगा

मेरी ज़िन्दगी का सपन पूरा होगा
वो ख़्वाबों का मेरा महल अपना होगा

बनूँगी मैं मलिका उसी क़स्मे सुलताँ की
बन जाऊँगी नूर उस गुल शबिस्ताँ की

लेकिन नहीं है ये मंज़ूर उसको
ये अहले ज़मीं सजदे करती है जिसको

घुटी आरज़ूएँ मिटे सारे अरमाँ
लुटी ज़िन्दगी एक ही दाँव पर तो

रहे देखते ये ज़मीं आसमाँ भी
फँसी ही रही नाव तूफान में तो

ooo

निविड़ तिमिर

मेरे भाग्य के नील गगन में
घिर आई बदरिया काली

दूर क्षितिज से झाँक रहा वह
मुस्काता चंदा अम्बर का
मेरे मन के सघन गगन में
भी प्रकाश फैला क्षण भर था

पलट गई पर हाय अचानक
चुनरिया वह तारों वाली
मेरे भाग्य के नील गगन में
घिर आई बदरिया काली

क्रूर भाग्य यह क्रूर जगत यह
क्रूर हाय धरती आकाश भी
जगमग करता जगती तल यह
मुझे नहीं रेखा प्रकाश को

निविड़ तिमिर चहुँ ओर छा रहा
जाऊँ कहाँ बतला ओ आली
मेरे भाग्य के नील गगन में
घिर आई बदरिया काली

ooo

याद तुम्हारी आई

आज घिरे जब काले बादल
याद तुम्हारी आई।

झोंके आए मस्त हवा के
पड़ीं फुहारें मतवाली
मन की कलियाँ राह तकें पर
आए न तुम मन के माली

सब बगियाँ हैं महकी-महकी
मेरी बगिया मुरझाई
आज घिरे जब काले बादल
याद तुम्हारी आई।

दूर कहीं मधुबन में कूकी
कुहू-कुहू कोयल कारी
पर न हृदय मेरा मुस्काया
हाय हृदय से मैं हारी

सब के मधु स्वर गूँज रहे हैं
चुप है मेरी शहनाई
आज घिरे जब काले बादल
याद तुम्हारी आई।

○○○

दूर क्षितिज पर

दूर क्षितिज पर जहाँ
मिलते गले धरती गगन
कौन इंगित से बुलाता
दे रहा आवाज़ मुझको
आओ आ जाओ सजन
मैं खड़ी इस पार अपनी
मूक दुर्बलता लिए
नित बुलाऊँ मैं तुम्हें
तुम सामने आओ प्रिये
आओ तुम या ले चलो मुझको जहाँ
मिलते गले धरती गगन
सामने फैले महासागर
मेरे ऊपर गगन
मैं तुम्हें अपना समझ कर
लीन तुममें थी मगन
ये मेरा विश्वास
मेरी आस्था
तुम नहीं तोड़ोगे
इक विश्वास था
मैं तुम्हारा एक बिछड़ा अंग हूँ
मैं सदा से ही तुम्हारे संग हूँ
आओ मिल जाओ
यही आवाज़ गूँजेगी वहाँ
हैं जहाँ मिलते गले
धरती गगन

ooo

लहर का अस्तित्व

मेरे सामने दूर-दूर तक
फैला महासागर
और उसमें धरती
विशाल लहरों का
गर्जन नर्तन
और रुदन
बार-बार एक प्रश्न पूछ रही है
हम कौन हैं
ऊपर फैला नीला आसमान
तटों पर खड़े
ऊँचे नारियल के पेड़
सागर के गर्भ में फैली
अनन्त सृष्टि
सभी तो अपनी-अपनी
गति-आकृति
सुकृति-विकृति
सबके साथ रहते हैं
पर हम
हम तो बड़ी शान से
गरजती, लरजती
उफनती आती हैं
और चट्टानों से
सर टकरा-टकरा कर
अपना सम्पूर्ण स्वत्व
मिटा डालती हैं
रह जाता है केवल एक प्रश्न
एक गूँजता हुआ प्रश्न
जो हर लहर सिर पटक-पटकर कर
चोट खा-खाकर पूछती है
हम कौन हैं ?
हमारा स्वत्व क्या है ?

ooo

सागर का संदेश

ये सागर मुझे पास क्यों है बुलाता
किनारे पे अपने मुझे क्यों है बिठाता

क्यों क्षितिज की जानिब ये करता इशारे
वहाँ कौन है जो मुझे है पुकारे

दिखाता है शायद मुझे कोई सपना
वहाँ पर है शायद मेरा कोई अपना

ये लहरें मेरे सामने क्यों मचलतीं
मुझे देखती हैं तो क्यों ये उछलतीं

कभी आ के तलवों को हैं गुदगुदातीं
कभी धीमे से कान में गुनगुनातीं

कभी कूद कर हैं गगन तक पहुँचतीं
ज़रा चाँद देखा तो कैसे चिहुकतीं

कभी शान्ति से बहती हैं धीरे-धीरे
कि छोटी सी नैया भी आ सीना चीरे

ये शायद सिखातीं मुझे जग में जीना
किसी भी दशा में ज़हर तुमको पीना

मगर ज़हर को तुम सुधा में बदलना
न इच्छाओं को तुम दुग्धा में बदलना

ये संदेश देकर चलीं दूर जातीं
ज़रा देर में फिर से आकर बुलातीं

ये कैसा मेरा और सागर का नाता
ये सागर मुझे पास क्यों है बुलाता

ooo

स्नेह

अगर कभी भी किसी मोड़ पर
याद हमारी आ जायेगी

सुरभित मलयानिल सी यादें
हमें सुवासित कर जायेंगी

स्नेह तुम्हारा वायु रूप में
प्राण वायु हमको दे देगा

और हमारा नेह संदेशा
ले जाकर तुमको दे देगा

इक दूजे के स्निग्ध स्नेह से
अन्तर तक जब भीग जायेगा

देवलोक के देवों का मन
मृत्युलोक पर रीझ जायेगा

बन्धन स्नेह स्निग्ध यादों के
जब तक दिल में वास करेंगे

कितनी दूर रहें फिर भी हम
दिल से दिल के पास रहेंगे

ooo

खो गई डगर

मैं प्रेमनगर को चली मगर
खो गया नगर
मैं भटक रही हूँ डगर-डगर
खो गई डगर
किससे पूछूँ कैसे जाऊँ
मैं अपना लक्ष्य कहाँ पाऊँ
मैं भूल गई हूँ राह पंथ
कैसे हो पूरा प्रेम ग्रन्थ
मैं ढूँढ फिरी हूँ जग सारा
नैराश्य घिरा मन भी हारा
मैं प्रेम दिवानी भटक रही
मैं पग-पग पर हूँ अटक रही
नैनों में घिर आया सावन
खो गया कहाँ पर मन भावन
आँसू बह-बहकर सूख गए
मस्तिष्क हृदय बन ठूँठ गए
जीवन का यह कैसा क्रन्दन
जोगन बन घूम रही बन-बन
जाने मनमीत कहाँ खोया
मेरा सौभाग्य कहाँ सोया
दिन को न चैन न रात नींद
काँटों पर रहती आठ पहर
मैं प्रेम नगर को चली मगर
खो गया नगर
खो गई डगर

○○○

कैसे तुम्हें बतायें

कैसे तुम्हें बतायें कि हम हैं खोये कहाँ
याद करते हैं वो जगहें हम थे रोये जहाँ
रंजो-ग़म की कितनी लहरें
आती रहीं डराती रहीं
आँखें भी रात दिन बस
अश्क बरसाती रहीं
कैसे तन्हाई ने डेरा डाल लिया
कैसे तन्हाई में हर इक पल है जिया
कैसे सिर्फ दर्द अपना लगता है
छोड़ता है ज़रा सी देर को
तो अजब सा लगता है
कैसे खो गये रास्ते
खो गई मंज़िलें
कैसे मुरझा गये वक़्त से पहले ही
फूल अधखिले
हमसफर राह में ही बिछड़ते गये
क़तरा-क़तरा लम्हा-लम्हा
हम हर पल बिखरते गये
अपने क्या पराये क्या
सभी खो गये
और तो क्या
हम खुद से भी जुदा हो गये
हर जगह दिलाती है याद
हमने जो है सहा
कैसे तुम्हें बतायें कि हम हैं खोये कहाँ

ooo

रोने से अगर

रोने से अगर मिल जायें
मेरे बिछड़े अपने
रो रो के मैं भर दूँ सारे सागर
रोने से अगर ढ़क जायें
मेरे ज़ख़्म जिगर के
रो रो के बना लूँ मैं
आकाश की चादर
आ जाये एक बार वो
जो छोड़ गया मुझको
देकर जहाँ के दर्दो-ग़म
जो तोड़ गया मुझको
मैंने लुटा दीं उसकी यादों में बहारें
काटी है ज़िन्दगी यूँ यादों के सहारे
रातें तो काटीं मैंने नित जाग के आँखों में
फिर भी नहीं मैं रोई दुनिया की निगाहों में
आँसू बहाये कितने
छुप-छुप के अकेले में
दिखती रही मैं पत्थर
दुनिया की निगाहों में
रोने से अगर सच हो जायें
जीवन के मेरे सपने
दुनिया को बहा दूँ मैं
आँसू बरसा कर
रोने से अगर मिल जायें
मेरे बिछड़े अपने
रो रो के मैं भर दूँ सारे सागर

ooo

ऐ वतन

ऐ वतन हम तेरे तू हमारा सदा
दिल को छू लेती है तेरी हर इक अदा
तेरी नदियाँ पहाड़ तेरे झरने तालाब
गंगा जमना तेरी, तेरी झेलम चिनाब
तेरे तीनों तरफ फैला सागर का जल
तेरा आकाश कितना है निर्मल विमल
तेरे अम्बर की आशीष हम पर रहे
सूर्य चंदा सितारों की होवे कृपा।।

नीला सागर है नीला असीमित गगन
लाल स्वर्णिम जलें जिनमें सूरज किरण
तेरी धरती पे हरियाली सब ओर है
खेत खलिहान हैं आम पर बौर हैं
तेरे भंडार खाली न होवें कभी
तेरा दामन भरें ईश, यीशू, ख़ुदा।।

जो भी रहते यहाँ वे सभी भाई हैं
सिक्ख, हिन्दू या मुस्लिम या ईसाई हैं
है अचम्भित तेरी बात से सब जहाँ
कैसे मिलकर के रहते धर्म सब यहाँ
धर्म और जाति से फ़र्क़ पड़ता नहीं
खून का रंग है लाल सबका सदा।।

तेरे पशु पक्षी मानव अनोखे सभी
भावना प्रेम की कम न होती कभी
हिन्द सागर पखारे है तेरे चरण
तुझपे बरसाते हैं देवता भी सुमन
है मुकुट सा हिमालय तेरे शीश पर
तेरा ध्वज ऊँचा फहराये उस पर सदा।।

ऐ वतन हम तेरे तू हमारा सदा
दिल को छू लेती है तेरी हर इक अदा

ooo

मैं और मेरी ज़िन्दगी

कहाँ से आ कहाँ मिलें
मैं और मेरी ज़िन्दगी
करते रहें शिकवे गिले
मैं और मेरी ज़िन्दगी
हर राह पर हर मोड़ पर
टकराहटें होती रहीं
ज़ख़्म भी रिसते रहे
कराहटें होती रहीं
फिर भी हम साथ-साथ चलते रहे
एक दूजे को खींचते रहे बहलाते रहे
मानते रहे मनाते रहे
मैं और मेरी ज़िन्दगी
जीने को ज़िन्दगी
पल-पल डरते रहे
पाने को ज़िन्दगी
रोज़ ही मरते रहे
ज़िन्दगी जीते रहे
मौत के इन्तज़ार में
पतझड़ को याद करते रहे
मौसम-ए-बहार में
प्यासा मुसाफिर
और तपता रेगिस्तान है
मैं और मेरी ज़िन्दगी
सूना सवेरा और अँधेरी शाम हैं
मैं और मेरी ज़िन्दगी

ooo

सहारा नहीं है

ज़िन्दगी की नदी
कैसी नदी है
जिसका कोई किनारा नहीं है
यह कैसी नाव है
जिसका कोई सहारा नहीं है
ये ज़िन्दगी के मेले
कभी न कभी
सब इसमें खेले हैं
इसमें आये उतार चढ़ाव
हमने तुमने सब झेले हैं
ज़िन्दगी की इस नदी में
कैसे-कैसे दर्द सहे जाते हैं
कुछ दर्द ऐसे भी होते हैं
जो न कहे जाते हैं
और न सहे जाते हैं
ज़िन्दगी बहती जाती है
ज़िन्दगी सहती जाती है
ज़िन्दगी हँसने और रोने की भाषा में
जाने क्या-क्या कहती जाती है
कब क्या हो जाये
कोई ठिकाना नहीं है
दिग्विमूढ़ दिशाहीन
लक्ष्य का कोई इशारा नहीं है
यह कैसी नाव है
जिसका कोई सहारा नहीं है

ooo

दोनों की नादानी

शायद आँखों के आँसू हैं सस्ते
मचल-मचल कर दिल रोया
निकला सब आँखों के रस्ते
जो भी दिल ने था बोया
कैसी दोनों की नादानी
बात नहीं करते आपस में
पर सहते रहते हैं मिलकर
जो गुनाह करते आपस में
आँखों ने टकटकी लगाकर
जब से उसको है देखा
दिल में कुछ धुकधुकी हुई
और खाया इस दिल ने धोखा
आँखों में बसी सूरत के लिये
दिल लुट-लुटकर रोया
इस दिल में छुपी मूरत के लिये
दिल घुट-घुटकर रोया
दिल की घुटन के सारे बादल
आँखों से आकर बरसे
दिल की नादानी के कारण
बेचारे बिछड़े घर से
अब निर्णय सबको है करना
किसने क्या पाया खोया
निकला सब आँखों के रस्ते
जो भी दिल ने था बोया

ooo

ज़िन्दगी चल रही है

दूर-दूर तक
जहाँ तक नज़र जाये
अपना पराया कोई
नज़र नहीं आये
कोसों तक ख़ामोशी
मीलों तक धुआँ
सिर्फ शून्य दिख रहा
रौशनी को क्या हुआ
सागर से भी गहरा, अकेलेपन का अहसास
शोर सा करती है, अपनी ही साँस
न कोई अरमान, न कोई आस
न कोई पराया, न कोई ख़ास
ज़िन्दगी जीने में, कोई रस नहीं
पर मौत पर भी तो, अपना बस नहीं
ज़िन्दगी जीना एक बेबसी है
ज़िन्दगी की बड़ी यह बेकसी है
दूर तक दिखता नहीं
कोई भी साया
हो गई पराई
अपनी ही छाया
फिर भी ज़िन्दगी
निकल रही है
पिघल रही है
जल रही है
चल रही है

ooo

जीने की तड़प

मैं जिन्हें चाहूँ भुलाना
याद वो आते हैं क्यों
मेरे जीवन की खुशी को
लूटने आते हैं क्यों
चार दिन की चाँदनी थी
जब वो आये और गये
अब अँधेरों को दिखाने
मुझको आ जाते हैं क्यों
चाहती हूँ तोड़ दूँ
धागे जो गाँठों से भरे
टूटते धागों से खींचकर
वो चले आते हैं क्यों
तोड़ना मुश्किल बहुत
होता है रिश्तों को मगर
याद आ आकर सताने
मुझको आ जाते हैं क्यों
मैं ख्यालों से भटक कर
छोड़ना चाहूँ उन्हें
वो घने बादल से आकर
दिल पे छा जाते हैं क्यों
मुश्किलें आसान हो जायें
अगर मैं न रहूँ
मुझमें जीने की तड़प
भरने वो आ जाते हैं क्यों

ooo

एक बार आ जाये

यह कैसी ज़िन्दगी है
जिसमें घर के अन्दर या बाहर
कहीं चैन नहीं
कोई सुनहरा दिन
कोई सुख की रैन नहीं
घर में घुटती हैं साँसें
हर साँस सौ-सौ सवाल पूछती है
बाहर दुनिया की नज़रें
जाने क्या-क्या बूझतीं हैं
ज़िन्दगी कटती जाती है इक उम्मीद में
शायद कभी भले दिन आयेंगे
हमें घूरने वाले
शायद हमको समझ जायेंगे
कितने ही तूफान हों
रुकता नहीं ज़िन्दगी का सफर
हर हादसा देता है दिलासा
आयेगी एक दिन सुनहरी सहर
मौत से मुझे डर नहीं लगता
फिर मौत क्यों मुझसे घबराती है
आती है तड़पाती है
फिर डर के चली जाती है
यह ज़िन्दगी तो मौत की ही अमानत है
फिर वह क्यों मुझसे शरमाती है
रोज़ जलाने से अच्छा है
एक बार आ जाये
मुझे ज़िन्दगी के आख़िरी पड़ाव तक
इज़्ज़त से पहुँचा जाये

ooo

कितने धोखे

ज़िन्दगी में कितने धोखे खाये
और न जाने कितने हैं खाने
जिनके लिये हमने हवन किया
वही आ गये हमारा घर जलाने
जिनके दुख दूर करने का जतन किया
वही आ गये हमको सताने
जिनकी मुस्कुराहटों पर
हम होते थे न्यौछावर
वही आ गये हमको रुलाने
जिनको हमने पढ़ना सिखाया
वही आ गये हमको पढ़ाने
जिनके लिए पढ़े श्लोक और ऋचायें
वही आ गये गालियाँ सुनाने
जिनको गले लगाना चाहा
वही लगे हमें दुरदुराने
ज़िन्दगी में हर कदम पर ठोकरें खाईं
किसी न किसी बहाने
देखकर हमारी बेबसी
अपने लगे हैं मुस्कुराने
ज़िन्दगी की कितनी बड़ी विडम्बना है
अपने बन जाते हैं बेगाने

ooo

झलक

मुझको हर चीज़ में क्यों तेरी ही झलक दिखती है
क्यों मेरे दिल में सिर्फ़ एक ललक रहती है
छोड़कर घर अगर सागर के तट पे जाती हूँ
हर लहर में तेरी सूरत ही मुझे दिखती है
वन में उपवन में नहीं है चैन मुझे
फूलों, पत्तों में तेरी महक मुझे मिलती है
झीलों, झरनों, तालाबों, नदियों में
एक-एक बूँद तेरी मूर्ति मुझे लगती है
ऊँचे पर्वत की ऊँची चोटी पर
घाटियों वादियों में बस तू ही
हूक पपीहे की हो या कूक कोयल की
हर जगह बस तेरी आवाज़ मुझे मिलती है
बंद कमरों में बैठकर देखा
हर तरफ सिर्फ़ तेरी आहट है
कानों में हर समय मेरे
तेरी पदचाप सिर्फ़ बजती है
तुझसे मिलने की आग आठों पहर
सीली लकड़ी सी बस सुलगती है
जो सज़ा आओ आ के दे जाओ
एक चाहत है जो कसकती है
बस तेरी इक झलक की आस लिए
ज़िन्दगी हर समय दहकती है
तेरे आने पे क्या समां होगा
कल्पना झूम कर बहकती है

ooo

काश कोई आता

काश कोई आता दो बातें कर जाता
काश कोई जीवन का खालीपन भर जाता
जीवन में सुख-दुख तो आता है जाता है
सुख-दुख से मानव का जन्मों का नाता है
अपने दुख-दर्द उसे खुद ही मिटाने हैं
क़िस्मत के अँधियारे खुद ही हटाने हैं
फिर भी कभी मन में इक हूक सी उठती है
काश कोई अँधियारे में उजियारा भर जाता

सब कुछ गुम हो गया सिर्फ तन्हाई है
अपनी ही आवाज़ लगती पराई है
कोई भरोसा नहीं कोई भी आस नहीं
सब कुछ तो लुट गया खुद पर विश्वास नहीं
काश बेरंग जीवन में कोई रंग भर जाता
काश कोई आता दो बातें कर जाता

सब तरफ ख़ामोशी चुप का बसेरा है
रात सी है हर समय खो गया सवेरा है
कितने युग बीत गये कोई नहीं आया
अब तो साथ छोड़ रहा अपना ही साया
इस जीवित खण्डहर की एक आस बाक़ी है
काश इसमें गीतों की गूँज कोई भर जाता

ooo

चुप्पी की चादर

रूठे हो तो रूठे रहो
पर एब बार नज़र भरकर तो देखो
बात नहीं करनी न करो
पर एक बार सुनकर तो देखो
बहुत सी क़समें खाईं थीं
बहुत से वादे किये थे
बहुत से लम्हे
हमने साथ-साथ जिये थे
साथ नहीं रहना न रहो
एक बार उन लम्हों को
याद करके तो देखो
मैं याद करूँ न करूँ
लोग बहुत याद करते हैं
उनके दिए ताने
मेरी नींदें खराब करते हैं
चैन देने को न आओ
बेचैन करके तो देखो
दूसरों को जलाना तुम्हें खूब आता है
दूसरों को रुलाना तुम्हें खूब आता है
तड़पाना तो तुम्हें खूब आता है
एक बार खुद भी तड़प कर तो देखो
ये चुप्पी का चादर जो तुमने ओढ़ रखी है
मेरे दिल और दिमाग को तोड़ देती है
कुछ नहीं कहना चाहते न कहो
पर एक बार मुस्कुरा कर तो देख लो

ooo

प्राणों का दान

जब भी सुधियों के आँगन में
पदचाप तुम्हारी प्रिय आई
गुञ्जित हो उठा हृदय प्रांगण
नव स्वप्नों ने ली अँगड़ाई

क्षणभर में न जाने कितने
महलों का सृजन किया मैंने
कितनी ही मधुर आशाओं का
पल भर में वरण किया मैंने

मेरी स्मृतियों के उपवन में
अनगिन खग जैसे चहक उठे
फूलों सी सुरभित यादों से
घर आँगन तन-मन महक उठे

जब भी तुम आकर मुस्काए
प्रिय सुधियों की अमराई में
प्राणों का दान मिला जैसे
मुझको मेरी तन्हाई में

ooo

बिसर गया कोई

कोई एक मिल गया
अन्तर तक हिल गया
नैन हृदय एक हुए
बहक गया कोई

दुनिया का दर्द लिए
नयनों में जल भर के
दिल ने मनुहार करी
ठहर गया कोई

बन्धु प्रिय दूर हुआ
हृदय मुकुर चूर हुआ
कोई एक छोड़ गया
बिखर गया कोई

और फिर वक़्त ने
डाल दिया पर्दा
स्मृतियों के प्रांगण से
बिसर गया कोई

ooo

तुम्हारी हँसी

मित्र! जब हँसी का झोंका
हृदय को झकझोरे
तो एक निश्छल ठहाका लगा लो
हँसी को रोको मत
हँसी को टोको मत
क्या पता कल का
कोई ऐसी अनचाही लहर आ जाये
जो तुम्हारी हँसी को बहाकर ले जाये
पर तुम कभी कमज़ोर न पड़ना
अपनी हँसी को बचाये रखने के लिये
हँसने की आदत बनाये रखने के लिये
हँसने के नये-नये बहाने ढूँढना
दूसरों पर कभी न हँसना
खुद पर तो हँस सकते हो
खुद पर हँस कर ही
खुद की ताकत वापिस ला सकते हो
अगर हँसी भूल गए
तो अपने को, अपनों को
सबको भूल जाओगे
धर्म तक को सपने में
लाना भूल जाओगे
जीवन को निभाना ही धर्म है
धर्म को हँसकर निभाओ
जीवन को मरुस्थल नहीं
हँसता मुस्कुराता मरुद्यान बनाओ
जिस दिन तुम्हारी हँसी तुमसे रूठ जायेगी
तुम्हारे जीवन की वास्तविक डोर
तुमसे छूट जायेगी

ooo

कोई हमको बुलाया करे

कोई हमको बुलाया करे
मेरे अँधियारे जीवन के अँधियारे में
कोई दीपक जलाया करे
ज़िन्दगी के सफर में चले साथ-साथ
बिन बताये समझ जाये वो दिल की बात
कोई खुशियों के आँसू में भीगा करे
और हमें भी रुलाया करे
कोई हमको बुलाया करे
झिलमिलाती हुई चाँद की चाँदनी
खिलखिलाती हुई धूप ये गुनगुनी
कोई ऐसा जो कुदरत के हर रंग में
हमको झूला झुलाया करे
कोई हमको बुलाया करे
वक़्त के साथ जाते हैं रिश्ते बदल
रास्ते ज़िन्दगी के नहीं हैं सहज
सारी दुनिया हमें चाहे भूले मगर
वो हमें न भुलाया करे
कोई हमको बुलाया करे

ooo

शुक्रिया ज़िन्दगी का

ज़िन्दगी से जब भी कुछ माँगा मैंने
आई कहीं से एक आवाज़ दिया बहुत कुछ मैंने

ये ईंटों के महल ये पत्थरों की मीनारें
ये चमचमाते फर्श ये संगमरमर की दीवारें

ये महल दुमहले न तेरे थे न रहेंगे
दो गज़ ज़मीन ही है तेरी जो तुझे हम देंगे

तेरे तन पे हैं जो कपड़े ये चमकते गहने
दिखाकर बड़ी खुशियों से जिन्हें तू पहने

पहन कर जिनको बहुत फूलता है तू
पर एक बात रोज़ भूलता है तू

दो गज़ कपड़ा ही बहुत है तेरे तन के लिये
ये ढेर जमा करता है तू किसके लिये

जायेगा जब लम्बे सफर को कुछ न उठा पायेगा
जितना दिया मैंने वो ही संग तेरे जायेगा

शिकायत न करना अब कोई ज़िन्दगी से
शुक्रिया करो उसका जो पाया है ज़िन्दगी से

ooo

किरणों की दस्तक

सुबह की धूप की सुनहरी किरणें
दे रही हैं दस्तक
मेरे दरवाज़ों पर
न जाने क्यों
मैं ध्यान नहीं दे रही
उनकी आवाज़ों पर
कैसे उन्हें समझाऊँ
मेरे अँधेरों में
उनकी कोई जगह नहीं
वरना उनसे रूठने की
मेरे पास कोई वजह नहीं
कैसे उन सुनहली रुपहली
हँसती मुस्कुराती किरणों को
अपनी उदासियों में
वीरानियों में
अँधियारी तन्हाइयों में
शामिल कर लूँ
इसलिये मैंने
अपने दिल दिमाग
और घर के
सब खिड़की दरवाज़े
बंद कर लिये
कहीं धूप की
भोली सुनहरी किरणें
दस्तक न देने लगें
मुझे मनाने के लिए

ooo

खुद से ही छल करें

मुझको मेरे सूनेपन ने सपने बहुत दिखाये
उन सपनों में उसने मेरे अपने बहुत दिखाये

पर वो अपने कब अपने थे ऐसा मुझको याद नहीं
उनकी मीठी यादों से काई कोना आबाद नहीं

मुझको तो लगता है मुझको पाला सदा अभावों ने
पल-पल मुझको साला है मेरे न किए गुनाहों ने

मेरे अपनों ने छीनी हैं नींदें मेरी रातों की
मारी तेज़ कटार हृदय में अपनी तीखी बातों की

मेरे अपनों ने ही छीना मुझसे सदा बहारों को
मेरे अपनों ने ही छीना मुझसे सदा सहारों को

क्यों फिर भी उन अपनों की यादों में हम रोते रहते
शायद सपनों में आ जायें यही सोचते जब सोते

क्यों उनकी यादों को फिर भी दिल से सदा लगाया
ठोकर को उनकी क्यों समझा क़िस्मत का सरमाया

खुद से ही छल करके मैंने खुद ही धोखे खाये
मुझको मेरे सूनेपन ने सपने बहुत दिखाये

○○○

कोई गुनाह नहीं

मैं भटक रही हूँ इस दुनिया के
अँधियारे गलियारों में
मैं खोज रही हूँ हरियाली
इन उजड़ी हुई बहारों में
चाहे अपनों ने मुँह मोड़ा
मैंने अपनों को न छोड़ा
युग ने मुझको ठुकराया पर
मैंने युगधर्म निभाया है
मन में लेकर आशा डोरी
मैं फूल ढूँढती शूलों में
मैं प्यार को खोजती भूलों में
सबकी भूलों को भूल उन्हें
मैं स्नेह बाँटना चाह रही
अँधियारे में इक किरण ढूँढना
यह तो कोई गुनाह नहीं
मैं कोई तिनका ढूँढ रही
इन टूटे हुए सहारों में
मैं खोज रही हूँ हरियाली
इन उजड़ी हुई बहारों में

ooo

लाखों लगाओ पहरे

अपनों के दिये ज़ख़्म बड़े होते हैं गहरे
आते हैं हरा करने उन्हें अपनों के चेहरे

तुम लाख भुलाओ उन्हें वो आते रहेंगे
कहीं घाव न भर जाये वो सताते ही रहेंगे

चेहरे पे दो इंच की मुस्कान लिये वो
आँसू तुम्हारी आँखों में लाते ही रहेंगे

आयेंगे जब भी साथ में लायेंगे आँधियाँ
हम हैं तुम्हारे याद दिलाते ही रहेंगे

सपनों में भी आते हैं तो आते हैं डराने
तुम चैन से सोना नहीं अहसास दिलाने

अपनों के मारे फूल भी पत्थर से हैं लगते
इनकी ही मार से हम रातों को हैं जगते

वो आते ही रहेंगे लाखों लगाओ पहरे
अपनों को दिये ज़ख़्म बड़े होते हैं गहरे

ooo

बुलाते हैं उजाले

सूरज की किरण आकर तुझको जगा रही है
घर के अँधेरे तेरे आकर भगा रही है
उठ जाग आ जा बाहर बुलाते हैं उजाले
बाहर निकल के तू भी उजालों को बुला ले
गर छोड़कर अँधेरे बाहर न तू आयेगा
तो रौशनी से कैसे तू आँख मिलायेगा
जग में अगर है जीना तो अँधेरों से निकलना है
कुछ दूसरों से मिलना कुछ खुद से भी मिलना है
जिस दिन तू खुद से मिलकर
खुद को जान जायेगा
रौशनी किसे कहते हैं
पहचान जायेगा
सूरज की किरण रोज़ तुझे
राह दिखायेगी
अँधियारे से दूर
उजियारे की ओर ले जायेगी

ooo

दिल कहे तो

साथी मेरे
कभी वक़्त मिले तो आ जाना
कभी वक़्त कहे तो आ जाना
फिर वक़्त से गिला न करना
कोई शिकवा या शिकायत न करना
वक़्त एक बार
सबको मौका देता है
इन्सान ही वक़्त को ठुकरा कर
पीछे रह जाता है
वक़्त तो बार-बार
उसके कानों में कह जाता है
आऊँगा
एक बार ज़रूर आऊँगा
मुझे पहचाना लेना
अपनों के पास पहुँच कर
उन्हें जान लेना
एक बार चूक गये
तो जीवन भर पछताओगे
साथी की पुकार फिर
कभी न सुन पाओगे
कभी दिल कुछ सुने तो आ जाना
कभी दिल कुछ कहे तो आ जाना

ooo

अपनों की कोशिशें

जगने भी नहीं देते सोने भी नहीं देते
कैसे हैं ये अपने हमें रोने भी नहीं देते

ये लूटते सुख चैन हँसा करते हैं हमपे
जो बात नहीं उसका गिला करते हैं हमसे

कसते हैं मुस्कुरा के व्यंग हमको सुना के
देते हैं ठोकरें ये हमें पास बुला के

दिल पे लगे जो घाव वो भरने भी नहीं देते
मरना अगर चाहें हमें मरने भी नहीं देते

दिल चूर-चूर होता जब अपने तोड़ते हैं
हम किरच-किरच करके इस दिल को जोड़ते हैं

नाकाम रहती कोशिशें इस दिल को जोड़ने की
अपनों की रोज़ कोशिशें रहती हैं तोड़ने की

ooo

क्या यही है जीवन

जीवन
एक भ्रम
कभी मतिभ्रम
कभी दिग्भ्रम
गतिरोध
हर दोराहे पर
दिशाहीन
हर चौराहे पर
अवरुद्ध
मार्ग लक्ष्य का
विरुद्ध
हर तर्क तथ्य का
सन्दर्भ खो गए
प्रयास खो गए
दर्पण में प्रतिबिम्ब
पराये हो गये
न
यह दृष्टिभ्रम नहीं
है केवल
एक भ्रमित
दिग्विमूढ़ आक्रोश
अस्तित्वहीनता का बोध
केवल एक भग्न स्वप्न
क्या यही है जीवन?
○○○

यादें ले रहीं करवटें

ये रास्ते में छा रही क्यों
धुँध सी घनी
धुएँ में डूबकर क्यों
आ रही रौशनी
कैसे पता चले
कदम कहाँ जायेंगे
कहाँ के लिये चले
कहाँ पहुँच जायेंगे
धुँधलाती आकृतियाँ
खो रहीं अँधेरों में
बलखाती विकृतियाँ
घेर रहीं घेरों में
निकल कर अतीत के अँधेरों से
यादें ले रही करवटें
वर्तमान में डाल रहीं
कितनी गहरी सिलवटें
प्रश्न-चिह्न लग रहे
भविष्य के भाग्य पर
क्या बताये वक़्त
छिपा काल के गर्भ में क्या
वक़्त पर तो धुँध की
चादर है तनी
पल-पल है एक
अनजानी सनसनी
मन में मची है हलचल तूफानी
धुएँ में डूबकर क्यों
आ रही रौशनी

○○○

जब तक जीवन है

कब क्यों और कैसे
ज़िन्दगी इस अन्धे मोड़ पर
आकर ठहर गई
कहाँ खो गए सारे रास्ते
ये कहाँ आकर
ज़िन्दगी की धारायें बिखर गईं
जहाँ दूर-दूर तक
मेरी पगडंडियाँ तक खो गईं
कहीं कोई राह नहीं
ज़िन्दगी जीने की भी
कोई चाह नहीं
फिर भी जब तक जीना है
जीने की नई राहें ढूँढनी पड़ेंगी
अन्धे मोड़ों को
नई दिशा, नया मोड़ देना होगा
बदलना होगा
जीवन धारा के बहाव में
गति लानी होगी
जीवन के ठहराव में
क्योंकि जीवन
ठहरने का नहीं
चलने का नाम है
जब तक जीवन है
तब तक काम है

ooo

वक़्त की बेज़ुबानियाँ

खो गया एक क़तरा वक़्त का
छोड़कर निशानियाँ
गुम हो गया कहाँ
छोड़कर जहां
पर जा सका क्या छोड़कर
सबसे मुँह को मोड़कर
उस पल की तो बन गई
अनगिनत कहानियाँ
याद करके उस पल को
वक़्त के उस छल को
झेलते रहे मन पर
दरारें पड़ती रहीं तन पर
वक़्त की मार से
बुढ़ापे में
बदल गईं जवानियाँ
वक़्त के क़तरे जाते रहे रूठते रहे
पर पीछे कुछ सवाल छूटते रहे
क़िस्मतें जागती रहीं सोती रहीं
सवालों के जवाब
जानने को रोती रहीं
कैसे देंगी उन्हें जवाब
वक़्त की बेज़ुबानियाँ
कैसे पायेंगी आवाज़
वक़्त की खामोश कहानियाँ

ooo

इतनी करें इनायत

बीते हुए ज़माने क्यों याद आते रहते
याद आते हैं तो आयें पर क्यों सताते रहते

पहरे बड़े लगाये इस बेकरार दिल पे
फिर भी क्यों बजते रहते हैं तार-तार दिल के
वो कौन हैं जो आकर इनको बजाते रहते

सपनों में हैं क्यों आते जो बन गये थे सपने
जो बन गये पराये आ जाते बनने अपने
नींदों में मेरी आकर मुझको जगाते रहते

न अब कोई गिले हैं न है कोई शिकायत
न हमको याद आयें इतनी करें इनायत
हम कुछ न पूछें फिर भी क्या-क्या बताते रहते

मेरे खुदा सितम ये कैसे तू ढा रहा है
जो सुन के सह न पाऊँ सब कुछ सुना रहा है
जिनसे न मिलना चाहें उनसे मिला रहा है
हर मोड़ पर वो चेहरे मुझको दिखाते रहते
बीते हुए ज़माने क्यों याद आते रहते

ooo

झूठी कहानी

गया कैसे बचपन कब आई जवानी
बनी कब अचानक बुढ़ापा जवानी

मुझे तो है लगती ये झूठी कहानी
करे प्रश्न मुझसे है बेटी सयानी

कभी छोटी थी क्या मेरी बुढ़िया नानी
सुनाओ मुझे नानी की सब कहानी

घड़े भर के कैसे उठाती थी नानी
न पी सकती वो अपने हाथों से पानी

भला कोई बच्चा बने बूढ़ा कैसे
मुझे तो हैं लगती ये बातें पुरानी

क्या तुम भी दिखोगी मेरी नानी जैसी
बनोगी जब तुम मेरे बच्चों की नानी

ooo

तब बरसीं मेरी आँखें

जब-जब बरसी सावन की घटा
तब-तब बरसीं मेरी आँखें
जब बादल अम्बर पर छाये
तब धुँधलाई मेरी आँखें
यादें ही यादें उमड़ पड़ीं
घनघोर घटायें घुमड़ पड़ीं
झम-झम बरसा नभ से पानी
छम-छम बरसीं मेरी आँखें
कैसे बतलाऊँ क्या रिश्ता
बादल से मेरी आँखों का
जब-जब घिरते कारे बदरा
बदरा जातीं मेरी आँखें
बरसातीं अपने साथ मुझे
तन-मन सारा भीगा-भीगा
भीगे दिल के खोलें ये भेद सभी
भीगी-भीगी मेरी आँखें
अम्बर में विद्युत कड़क गई
मेरा अन्तर भी धड़क गया
जब-जब अम्बर जी भर रोया
तब-तब बरसीं मेरी आँखें

ooo

दर्द का नाज़ुक तार

कभी-कभी
अचानक ही
जुड़ जाते हैं कुछ अनाम से रिश्ते
कभी किसी अजनबी से
कभी किसी दूर पार के अपने से
वो सिर्फ़ एक लम्हा होता है
जब एक के दर्द का नाज़ुक तार
दूसरे के दिल के तार को
अनछुए ही छू कर
झंकृत कर देता है
दर्द का दर्द झिंझोड़ देता है
और अचानक दो तार
एक दूसरे की तरफ मुड़ जाते हैं
दो दिल एक दूसरे से जुड़ जाते हैं
दर्द के ये नाज़ुक तार
जुड़कर बाँट लेते हैं दर्द को
जुड़कर काट लेते हैं दर्द को

ooo

दर्द का अन्दाज़ा

क्यों खुद को इतना सताते हो
दिल की बात क्यों नहीं बताते हो
कैसे कोई लगाये तुम्हारे दर्द का अन्दाज़ा
एक क़तरा आँसू भी नहीं बहाते हो
कुछ कहती सी लगती हैं माथे की लकीरें
क्यों झूठी हँाह से इनको छुपाते हो
जब आँखों में लहरा जाती है एक दर्द की लहर
तब आँख क्यों नहीं मिलाते हो
दूसरों के दर्द में सिसकते हो
अपना ग़म क्यों नहीं सुनाते हो
दर्द से छलनी दिल के साथ ऐ दोस्त
न जाने कैसे तुम जिये जाते हो
आँसू ये दिल ही दिल में पी-पीकर
क्यों दिल को छलनी किये जाते हो
क्यों दिल को इतना सताते हो

ooo

कुछ मेरे अपने होते थे

मुझको याद आता है कभी
कुछ मेरे अपने होते थे
हम साथ-साथ हँसते थे
और साथ-साथ रोते थे
कैसे थे वो दिन बचपन के
जब सब ही अपने लगते थे
न दिल में थी कोई ईर्ष्या
न कोई काँटे उगते थे
हिलमिल कर खेला करते थे
हम साथ-साथ पढ़ते थे
मिल-बाँटकर खाते-खाते
कुछ सपने गढ़ते थे
फिर भविष्य की डोर पकड़ कर
हम पतंग से उड़ते-उड़ते
पहुँच गए जाने किस जग में
नये रिश्तों से जुड़ते-जुड़ते
बचपन बीता पचपन आया
उम्र और अनुभव के संग-संग
सम्मुख जीवन दर्पण आया
कुछ रिश्ते कमज़ोर हो गए
कुछ अपने कुछ दूर हो गये
दुनियादारी के चक्कर में
मेरे अपने कहाँ खो गए
नज़रें ढूँढ रही हैं उनको
जिनके काँधे पर सिर रखकर
हम हँसते रोते थे
कुछ मेरे अपने होते थे

ooo

कैसे बतलायें समीकरण

कुछ याद रहा कुछ भूल गये
ऐसे जीवन हमने काटा
कुछ नहीं पता क्या लाभ हुआ
कितना खाया हमने घाटा
सर्दी गर्मी पतझड़ बसन्त
सब आते-जाते रहे सदा
मेरी काँटों की बगिया में
कुछ फूल खिले थे यदा कदा
फूलों की चाहत में मेरे
काँटे ही बढ़ते जाते हैं
फिर भी जीवन संघर्ष सदा
हम खुद से लड़ते जाते हैं
यह है विडम्बना क़िस्मत की
जो फूल मिले बन शूल गये
सबको खुश रखने की धुन में
हम बस त्रिशंकु बन झूल गये
कैसे बतलायें समीकरण
कितना सुख-दुख हमने बाँटा
कुछ याद रहा कुछ भूल गये
ऐसे जीवन हमने काटा

○○○

एक दृष्टि

आजकल जब मैं
आईने के सामने खड़ी होती हूँ
तो उसमें एक छवि प्रतिबिम्बित होती है
प्रतिबिम्ब कुछ पहचाना सा लगता है
मेरी धुँधलाई दृष्टि
आँखें फाड़-फाड़कर उसे देखती है
पहचानने की कोशिश करती है
फिर सब धुँधला जाता है
क्या ज़िन्दगी के थपेड़ों ने
मेरे अन्दर धड़कते दिल के अलावा
सब कुछ बदल दिया
इस शरीर के अन्दर तो
आज भी उस बच्ची का दिल धड़कता है
जो माँ के आँगन में रस्सी कूदती थी
गा-गाकर गाना झूला झूलती थी
गुड़िया से खेलती थी किताबें पढ़ती थी
भविष्य के लिये कुछ सपने गढ़ती थी
फिर न जाने कब, न जाने कैसे
हर दिन एक झुर्री बनकर
मेरे चेहरे पर अपनी निशानी छोड़ता गया
ज़िन्दगी का हर क्षण मेरे अस्तित्व पर
अपनी कहानी लिखकर दौड़ता गया
न जाने कब क्षण-क्षण बदलते क्षण वर्षों में बदल गये
और मेरे बचपन को बुढ़ापे में बदल गये
आज जब ज़िन्दगी ठहर गई है
तो वक़्त मिला है आईना देखने का
खुद पर एक दृष्टि डालने का

ooo

जो आज मिल रहा है

जी लो जी भर कर
यह पल
जो आज मिल रहा है
क्या पता कल
यह बीता पल
याद आकर तड़पाये
क्यों नहीं हम जी पाये
उस प्यारे पल को
क्यों रोते रहे याद करके
कभी बीते कभी आने वाले कल को
जो हमारे हाथों में था
उसे क्यों खो दिया
क्यों नहीं उस पल को
प्यार से जी कर
एक प्यारी सी याद बनाकर
दिल में सहेज लिया
यह सब सोचकर
लुटा हुआ दिल रोता रहे
खुद को खो देने का आघात
मुत्युपर्यन्त कचोटता रहे

ooo

एक लक्ष्य के साथ

जिये बिना मरा न जाये
मरे बिना जिया न जाये
मर-मर के जीने
जी-जी कर मरने का विष
न छोड़ा जाये न पिया जाये
कुदरत का करिश्मा है कि
जीवन के हर सन्दर्भ का रिश्ता
मौत से जुड़ जाता है
जीवन का हर तार
कौन जाने कब और कैसे
उस ओर मुड़ जाता है
किन्तु मृत्यु की विभीषिका को भूलकर
जो जीवन संघर्ष में जूझता रहता है
जो जीवन के पल-पल को
ईश्वरीय देन समझ कर पूजता है
वह मौत की याद में तिल-तिल नहीं मरता
वह हर पल को जीता है
मृत्यु की याद में काटता नहीं
कर्त्तव्य पूर्ति के बाद
एक पूरी ज़िन्दगी
एक लक्ष्य के साथ जीने के बाद
जब वह लम्बी नींद में सोता है
तो कहता है
बस अब मुझे कोई न जगाये
और मुझे कोई न बुलाये

ooo

मधुर प्यारी कथायें

भूल कर बीते दिनों की
दुख भरी कड़वी गाथायें
आओ गढ़ लें कुछ नई
मीठी मधुर प्यारी कथायें
क्यों स्वयं करते रहें
आघात हम अपने हृदय पर
क्यों न शूलों को हटाकर
फूलों को अपना बनायें
एक जीवन जो मिला है
हम जियें जी भर के उसको
क्यों न चुनकर सुख भरे क्षण
हम नए सपने सजायें
कण्टकों की राह पर तो
हम सदा चलते रहे हैं
आओ हम राहें बदल कर
घाव काँटों के भुलायें
सो गईं जो भावनायें
खो गईं जो कामनायें
सो गए संगीत की
गीत लय को हम
फिर से जगायें

ooo

मेरी यादों में

चलता रहता है खेल
मेरी यादों में
अँधेरों का उजालों का
कभी हृदय सन्तोष से भर जाता है
कभी मेला लग जाता है सवालों का
कोई मीठी सी याद
आकर एम मुस्कान छोड़ जाती है
कोई तीखी सुई सा चुभती याद
दिल में चुभकर
दिल तोड़ जाती है
यादों के इस झुरमुट में छिपकर
मैं कभी हँसती हूँ कभी रोती हूँ
सपनों में भी आकर सताती हैं यादें
झिंझोड़ कर जगाती हैं
जब भी मैं सोती हूँ
बेख़बर चली आती हैं
यादों की परछाइयाँ
कभी धुन सुनाती हैं मातमी
कभी बजाती हैं शहनाइयाँ
घिरती हैं तिरती हैं
सैकड़ों परछाइयाँ
दिल में दिमाग में
ख़्वाबों में ख़्यालों में
डूबती इतराती रहती हूँ मैं
अँधेरों में उजालों में

ooo

तुम भी उलझो

मैं छुपा तूफान दिल में
जाने कब से रह रही हूँ
क्यों शिकायत कर रहे हो
जो मिला वह दे रही हूँ
जो थपेड़े दर्द के दिल पर पड़े हैं
चित्र कुछ उनसे नए मैंने गढ़े हैं
गीत ग़ज़लें और नग़मे
जो कभी मैंने लिखे हैं
उनमें टूटे दिल के टुकड़े ही
तुम्हें बन्धु दिखे हैं
खून के क़तरे जो आँसू बनके निकले
देख जिनको तुम शिकायत कर रहे हो
क्या ख़ता मैं कर रही न जान पाई
क्या कभी टूटे हुए साज़ों ने मीठी धुन बजाई
तार टूटे साज़ की धुन सुन रहे हो
तो इनायत कर रहे हो
तार टूटे देखकर तो रूठते हो
साज़ पर गुज़री जो
तुम उसको भी समझो
मेरे अन्तर की व्यथा की
गुच्छा-गुच्छा उलझनों में
एक पल को ही सही
पर तुम भी उलझो

ooo

बर्फीली उदासी

यह जो बर्फीली उदासी
छुपकर बैठी रहती है
मेरे अन्तर के गह्वर में
जब कभी ज़रा सा बाहर झाँकती है
एक तीव्र विद्युत सी कौंध जाती है
मेरे सम्पूर्ण क्लेवर में
मेरी अनुभूति में
मेरी आसक्ति में
मेरे एक-एक भाव की अभिव्यक्ति में
मेरे स्वप्नों के साम्राज्य में भी
क्यों यह बर्फीली ठंडी उदासी
छिप-छिपकर झाँकने आ जाती है
मैं इससे जितना दूर भागती हूँ
उतना पास आ-आकर
कभी मुझे जलाती है
कभी रुलाती है
हिलाकर रख देती है मेरा पूर्ण अस्तित्व
बौना कर देती है मेरा व्यक्तित्व
काश कहीं से आ जाती
कोई स्नेहमयी किरण
जो अपने स्नेह की ऊष्मा से
इस बर्फीली उदासी को पिघला देती
जो छुपकर बैठी है
मेरे अन्तर के गह्वर में

ooo

वे सारे ऋण

हर वर्ष एक स्वतंत्रता दिवस आता है
हर वर्ष आकर चला जाता है
उस एक दिन
सबको याद आते हैं
याद दिलवाये जाते हैं
बार-बार पुकारे जाते हैं
वे शहीद
जिन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिये
न्यौछावर कर दिये अपने अमूल्य प्राण
फिर रात गई बात गई की तर्ज़ से
सब फेर लेते हैं आँखें पूर्वजों के कर्ज़ से
किसी को नहीं रहती उन शहीदों की याद
सबकुछ भूल जाता है उस एक दिन के बाद
फिर शुरू हो जाते हैं राजनीति के दाँव पेंच
कैसे अधिक से अधिक वोट
लें अपनी और खेंच
कैसे एकत्रित कर लें धन दौलत
अगली सात पीढ़ियों के ने दिये
यूँ ही हर वर्ष हम
स्वतंत्रता दिवस मनाते रहेंगे
और स्वतंत्रता दिलाने वालों के
नाम ले-लेकर
उन्हें याद कर-करके
उन्हें भुलाते रहेंगे

ooo

ज़िन्दगी ठिठक गई

ये कैसे मोड़ पर आकर
ज़िन्दगी ठिठक कर खड़ी हो गई है
जहाँ आकर सब कुछ बेमानी सा लग रहा है
क्या यह मोड़ आख़िरी मोड़ है
या इसके आगे अभी
आधे-अधूरे अरमानों की
ज़िन्दगी के अहसानों की
शेष कोई और होड़ है
एक अजीब सी बेचैनी
घेर रही है दिल और दिमाग़ को
एक-एक साँस कुरेद रही है
साँस-साँस में छिपी आग को
हवा दे रहे हैं आने वाले पल
एक कल बीत गया
क्या लायेगा आने वाला कल
इन्हीं के बीच में आकर
ज़िन्दगी अटक गई है
शायद इसी मोड़ पर आकर
ज़िन्दगी ठिठक गई है

ooo

कुछ गीत मुझे गा लेने दो

न टूट जायें ये साज़ मेरे
रूठों को मुझे मनाने दो
जीवन के दर्द भुलाने को
कुछ गीत मुझे गा लेने दो

जीवन की राहों में चलकर
न चैन मिला मुझको पल भर
थोड़ी खुशियाँ ग़म हैं ज़्यादा
पूरा न करे कोई वादा
जो रोज़ तोड़ते हैं वादे
उनसे अब कुछ कह लेने दो

कुछ गीत मुझे गा लेने दो।
कुछ घाव छुपे दिल में मेरे
अन्तर में उलझन के घेरे
इस जग के लिये बहुत गाया
न गीत कोई उसको भाया
अब जो भी शेष बचा उसको
मुझको खुद से कह लेने दो
कुछ गीत मुझे गा लेने दो।

मेरा रोदन दिखलाता है
मेरे मन के आघातों को
क्यों झूठ समझते हो मुझको
ठुकरा कर मेरी बातों को
मेरे मन की इस वीणा के
टूटे तारों को बजने दो
कुछ गीत मुझे गा लेने दो।

जीवन में जो भी दर्द मिले
वो तो मेरा सरमाया हैं
सुख-दुख तो हैं आते-जाते
ये सब तो उसकी माया है
तोड़ो न मेरे सुर लय को
गीतों से झोली भरने दो
कुछ गीत मुझे गा लेने दो।

रूठों को मुझे मनाने दो
कुछ मन के गाने गाने दो
सब भाव हृदय के बहने दो
कुछ गीत मुझे गा लेने दो

ooo

पल-पल का जोड़

क्षण-क्षण बदलते इस जीवन में
कितने रास्ते हैं कितने मोड़ हैं
जीवन क्या है
पल-पल का जोड़ है
कितने तथ्य हैं
कितने लक्ष्य हैं
फिर भी मानव कितना अनभिज्ञ है
कोई नहीं जानता क्या भवितव्य है
कितनी बाधायें कितने इम्तिहान हैं
भीड़ से भरी राहें कितनी सुनसान हैं
कौन है अपना कौन पराया
कौन है आजतक यह जान पाया
क्या सत्य है
क्या असत्य है
कितना विश्वसनीय किसका वक्तव्य है
यूँ ही चलता रहता है जीवन का पहिया
किसी ने कुछ कह दिया किसी ने कुछ सुन लिया
जीवन क्या है
जीवन एक संघर्ष है
जीवन एक दौड़ है
जिसमें अनगिनत रास्ते हैं
अनगिनत
अवांछित अनजाने मोड़ हैं

ooo

खुल गई आँख

खुल गई आँख
टूट गया सपना
खो गया सबकुछ
जो पल भर पहले था अपना
पाया था बहुत कुछ
सपनों की माया में
आनंद ही आनंद था
अन्तस् में काया में
फिर क्यों अचानक
हो गया ऐसा अनर्थ
सपनों के साथ ही
खो गये जीवन के अर्थ
टूटे सपनों के साथ
कुछ साथी छूट गये
पलक की झपक में
जो हमको लूट गये
अब न कुछ सुनना है
न है कुछ कहना
खुल गई आँख
टूट गया सपना

ooo

नित नये सफर

ज़िन्दगी का एक बड़ा हिस्सा कट गया संघर्षों में
चाहकर भी कुछ कर न पाये जीवन के उन वर्षों में
कुछ कर्ज़ चुकाने थे कुद पूरे करने थे कर्त्तव्य
कुछ फर्ज़ निभाने थे कुछ सामने थे लक्ष्य
क़तरा-क़तरा ज़िन्दगी यूँ ही कटती गई
हर सोच ज़िन्दगी की टुकड़ों में बँटती गई
वह वक़्त भी आया और बीत गया
पर यह न समझो कि सबकुछ है रीत गया
बहुत कुछ करने को है अभी बाक़ी
कुछ करने की चाह अगर मन में हो साथी
आओ एक बार फिर
उन टुकड़ों को समेट कर जोड़ लें
जो भी हमारे पास शेष बचा है
उससे ज़िन्दगी को एक नया मोड़ दें
जब तक मन में कुछ नया करने की चाह है
ज़िन्दगी जीती रहेगी - ज़िन्दगी जीती रहेगी
लक्ष्यहीन ज़िन्दगी तो सिर्फ निराशा में जीती रहेगी
उम्र के बंधन में न बाँधो ज़िन्दगी को
आत्मा की अमरता का अहसास करवा दो ज़िन्दगी को
जब तक यह आत्मा इस शरीर में है
हम किसी से कम नहीं हैं
आत्मा के साथ परमात्मा भी है
न कहो हममें दम नहीं है
निकलते रहेंगे नित नये सफर को
खत्म न होने देंगे जीने की इस लहर को
कारवाँ यूँ ही चलता रहेगा - बढ़ता रहेगा
हर साथी हाथ बढ़ाकर साथी को साथ देता रहेगा
संगी साथियों का जब तक साथ है
ज़िन्दगी की एक मज़बूत डोर हमारे हाथ है

कैसी उदासी छा गई

आई संध्या आज फिर कैसी उदासी छा गई
आज फिर क्यों याद परदेसी पिया की आ गई

डूबते सूरज के संग-संग
आस मेरी डूबती
बाँध ली थी डोर जो
बनकर निराशा टूटती
डूबता दिन अस्त दिनकर
छा गई है कालिमा
आह कैसी हो गई अब
दिवाकर की लालिमा
घर चले पंछी मगन मन में
लिये विश्राम का सुख
भग्न मेरे हृदय में बस
कसमसाता विरह का दुख
प्राण तन में जब तलक हैं
कैसे बिसरे याद उसकी
स्नेह का दीपक जलेगा
याद में दिन रात उसकी

लम्हे वर्षों में हैं बदले मीलों तक हैं दूरियाँ
फिर भी क्यों इक कसक सी मेरे जिया में छा गई
आई संध्या आज फिर कैसी उदासी छा गई
आज फिर क्यों याद परदेसी पिया की आ गई

ooo

जाने कब मिलेंगे हम

बिछड़ कर यूँ आज जाने कब मिलेंगे हम
विरह क्षण कैसे कटेंगे निकल जाये न दम
क्या पता हम दो वियोगी मिल न पायें
भीड़ में दुनिया की हम दो खो न जायें
कल्पना मिलने की पर कैसे करूँ
हाँ निराशा के ये पल कैसे सहूँ
कल्पना को सत्य कैसे मान लूँ
एक झूठी आस लेकर धैर्य कैसे धार लूँ
दिन महीने साल भी आते रहेंगे
सर्दी गर्मी वर्षा और मधुमास भी आते रहेंगे
याद में तेरी सदा आँखें रहेंगी नम
बिछड़ कर यूँ आज जाने कब मिलेंगे हम

क्षितिज से धरती का मिलना देखता जैसे ज़माना
बन्धु वैसा ही मिलन हम चाहते खुद को सिखाना
दूर हैं पर एक होकर दुख ज़माने के सहेंगे
हम नदी के दो किनारे जो कभी मिल न सकेंगे
व्यर्थ के आँसू बहाकर दुख न दिखलायें किसी को
ज़िन्दगी की उलझनों में भूल जायें ज़िन्दगी को
ज़िन्दगी ने जो दिया हँसकर उसे अपना बना लें
एक को खोकर सभी मेरे हैं यह सपना सजा लें
एक दूजे की खुशी में भूल जायें ग़म
बिछड़ कर यूँ आज जाने कब मिलेंगे हम

ooo

हम नदी के दो किनारे

जो कभी मिलते नहीं हम हैं नदी के दो किनारे
कल्पना में ही रहेंगे एक दूजे के सहारे

युग युगान्तर से गगन ने छाँह धरती पर करी है
दो जनों के बीच जाने डोर यह कैसी बँधी है
फिर भी धोखे में हैं रहते क्षितिज पर दोनों हैं मिलते
पर मिलन सम्भव नहीं है दोनों ही यह जानते
गगन धरती को पुकारे हम नदी के दो किनारे

भग्न डर के भग्न टुकड़े जुड़ सके हैं क्या कभी
स्वप्न को भी सत्य होते तुमने देखा है कभी
आँख से निकला जो आँसू टपक धरती पर गिरा
अश्रु बनकर हृदय का कण-कण किरच बनकर गिरा
काट लेंगे ज़िन्दगी हम ताक कर नभ के सितारे
जो कभी मिलते नहीं हम हैं नदी के दो किनारे

ooo

भूल जाना यूँ किसी को

भूल जाना यूँ किसी को
क्या कभी सम्भव हुआ है
याद में रहकर विरह कातर किसी की
एक सच्चे स्नेह का उद्‌भव हुआ है
नृत्य करते हैं दृगों में
साथ में जो क्षण जिये थे
पलक में सब बंद कर लूँ
स्वप्न जो तुमने दिये थे
अश्रु जो निकले नयन से
चित्र उनमें हैं तुम्हारे
जो मिले कुछ पल खुशी के
मित्र अब वो हैं हमारे
व्यथित व्याकुल हृदय को
बहला सकूँ मैं बन्धु कैसे
मृत्यु को हम रोक दें
ऐसा बताओ कब हुआ है
भूल जाना यूँ किसी को
क्या कभी सम्भव हुआ है

○○○

गीत हूँ मैं वह

गीत हूँ मैं वह
जिसे अब कोई नहीं गायेगा
मेरे गीत का हर शब्द
किसी का दिल चीर जायेगा
मैं गीत की वह पंक्ति हूँ
जिसके अश्रुओं पर हदबंदी है
मैं गीत में क़ैद वह अहसास हूँ
जिसके मुस्कुराने पर पाबंदी है
मेरा गीत उस भँवर में डूब रहा है
जिसके किनारे खो चुके हैं
मेर निर्जीव गीत सब सहारे खो चुके हैं
यह कैसा गीत है
जिसके सारे अनुभूतियाँ और अहसास
न जाने कितनी परतों के नीचे सो गए हैं
मेरे गीत हर सहृदय की आँखें भिगो गए हैं
यह कैसा गीत है
जिसके सुर ताल लय
हो चुके हैं शून्य में विलय
काश कोई देवदूत आकर
कर दे मेरे गीतों को सुर ताल मय
अन्यथा यह गीत
कैसे किसी को धीर बँधायेगा
गीत हूँ मैं वह जिसे
कोई नहीं गायेगा

ooo

मैं अकिञ्चन

मैं अकिंचन तुम्हें पाकर
बन गया हूँ विश्व का सबसे धनी
तुम्हीं ने गुण दे दिये हैं
वरना मैं था निर्गुणी
नियति का उपहास हूँ
मैं मूक बंदी विश्व का
मैं किसी का कुछ नहीं
बस बोझ हूँ मैं सुष्टि का
मैं अकिंचन भाग हूँ बस धूलिकण
एक दिन हो जायेगी यह देह
धूलि में विसर्जन
हो चुकी हैं भग्न सारी कामनायें
यातना बन रह गया तन-मन
सह-सह कर यातनायें
मिट चुकी है भाग्य रेखा
जिसको कभी था स्वप्न में देखा
किन्तु जब से तुम्हें पाया है
एक बार फिर तुमने
मेरी अनुभूतियों को जगाया है
इस नवजागरण के लिये
सदा रहूँगा तुम्हारा ऋणी
मैं अकिंचन तुम्हें पाकर
बन गया हूँ विश्व का सबसे धनी

ooo

नैन बरसने लगते मेरे

व्यथा धधकती जब अन्तस् में
नैन बरसने लगते मेरे
पल-पल बहते जब ये निर्झर
भाव कसकने लगते मेरे
आकुल व्याकुल प्राण चाहते
हग जल नित्य बहाते रहना
चातक से उद्भ्रान्त नयन अब
सीख गये हैं सबकुछ सहना
पर न जाने क्यों फिर भी ये दो
नैन तरसते रहते मेरे
कैसा है यह रोदन जो
दिन रैन मेरे नयनों में बसता
पढ़कर नैनों की भाषा को
देख ज़माना मुझ पर हँसता
चाहूँ मैं देखे न कोई
मेरे अन्तस् की पीड़ा को
समझ न पाये कोई मेरे
घायल अन्तर की ब्रीड़ा को
फिर भी जाने अनजाने ही
नैन सरसते रहते मेरे
व्यथा धधकती जब अन्तस् में
नैन बरसने लगते मेरे

ooo

अनजानी इबारत

देने वाला भी तू
लेने वाला भी तू
फिर किसकी शिकायत किससे करें
जब दिया बहुत दिया
जब लिया बहुत लिया
यह कैसी इनायत है किससे कहें
सुख और दुख दोनों दिये
हमने भी हाथ बढ़ाकर दोनों लिये
अर्श और फर्श दोनों के नज़ारे देखे
दोस्तों और दुश्मनों के वार करारे देखे
फूल और काँटे जो मिले
जिनमें जितना था हमारा हिस्सा
रखते रहे सहेज कर
चलता रहा ज़िन्दगी का क़िस्सा
आग और पानी के खेल चलते रहे
दिन महीने सालों में बदलते रहे
सब कुछ बदलता रहा
नहीं बदला तो वह था तेरा लेना देना
हर उम्र के साथ तेरा तराज़ू तौलता रहा
वाह तेरे न्याय का क्या कहना
तू आज भी वैसा ही है जैसा था पहले
फिर भला कैसी शिकायत कैसे गिले
कहने वाला भी तू सहने वाला भी तू
यह अनजानी इबारत कौन समझे कौन पढ़े

ooo

छंद स्वच्छंद हुए

जो तुमसे कहना चाहा था
वो चाह के भी हम कह न सके
जो तुमसे सुनना चाहा था
दुर्भाग्य हमारा सुन न सके
इस तरह बंधु हम दोनों ने
सतरंगे सपने तोड़ लिये
दिल टूटे बनकर किरच-किरच
फिर भी न मिला जीने का सच
चाहे टूटे आईने के
कितने ही टुकड़े जोड़ लिये
अंधी सी एक गली मे जा
सारे दरवाज़े बंद हुए
लय और सुरताल बेसुरे हैं
तुक भूल छद स्वच्छंद हुए
हमने तो राहें दोराहे
चौराहे सारे छोड़ दिये
कैसी विडम्बना जीवन की
कैसा नियति का खेल रहा
जीवन का हर पल-पल छिन-छिन
बोझा जीवन का झेल रहा
छोटे से मेरे जीवन ने
न जाने कितने मोड़ लिये
इस तरह बंधु हम दोनों ने
सतरंगे सपने तोड़ लिये

ooo

बूँद पड़ी

आखिर को तुम कूद पड़ीं
प्यासे मुख पर बूँद पड़ी
पानी तो है अब बरसा
पर मनवा कितना तरसा
सागर से निकलीं कब से
क्या तुम राहें भूल गईं
या फिर मस्त हुईं इतनी
पर्वत-पर्वत झूल गईं
कितनी विनती की हमने
आ जाओ अब तो बरखा
पर तुमने भी बहुत दिवस
पल-पल छिन हमको परखा
आखिर दया तुम्हें आई
खुद से ही तुम जूझ पड़ीं
बादल से ले-ले के विदा
मेरे अँगना में कूद पड़ीं

ooo

जायें कहाँ तुम बिन

खो गये हो तुम कहाँ
ढूँढा किये हम रात दिन
क्या करें कैसे जियें
जायें कहाँ तुम बिन
एक जीवन बहुत कम है
स्नेह पाने के लिये
जान पाये सत्य यह
जब ज़ख़्म इतने खा लिये
भूलना मुमकिन नहीं
जो रह रहा रग-रग में है
उसके होने का गुमाँ
कण-कण में है जग-जग में है
हर फूल में हर पात में
है गन्ध उसकी ही बसी
रक्त ही हर बूँद में है
लालिमा उसकी रची
याद उसकी ही बसी रहती है
हर इक साँस में
जी रहे है हम निरन्तर
एक उसकी आस में
चैन दिन में है नहीं
और रात कटती तारे गिन
क्या करें कैसे जियें
जायें कहाँ तुम बिन

ooo

ज़िन्दगी की अर्थ

ढूँढ लो तुम ज़िन्दगी को ज़िन्दगी में
लूट लो पल-पल खुशी इस ज़िन्दगी में
ज़िन्दगी का अर्थ तो तुमको मिलेगा ज़िन्दगी में
ज़िन्दगी का तथ्य भी है ज़िन्दगी में
याद करके मौत को डरना भला क्या
मौत से पहले हमें मरना भला क्या
मौत तो थी ज़िन्दगी के साथ आई
ज़िन्दगी से मौत की पक्की सगाई
कौई न समझा सकेगा ज़िन्दगी और मौत का मतलब तुम्हें
ढूँढने हैं अर्थ सारे ज़िन्दगी में खुद तुम्हें
कुछ खुशी लो कुछ खुशी दो
एक अच्छी बात लेकर किसी से
एक अच्छी बात दे दो तुम किसी को
रोज़ जो दिन एक कट जाये खुशी का
रोज़ कर लें काम कोई हम भला सा
तो समझ लें पा लिया कुछ ज़िन्दगी में
पा लिया है ज़िन्दगी को ज़िन्दगी में

○○○

होने का अहसास

यादों के कितने
घने घनेरे जंगल ठगे रहते हैं
दिल के गहरे अँधियारे कोनों में
यादों के कितने झिलमिलाते दिये
जगमग जगे रहते हैं
दिल के उजियारे कोनों में
यादें यादें यादें
मीठी कड़वी तीती तीखी
हर समय की हर हालात की
हर अनुभव की हर बात की
छुपी रहती हैं दिल की परतों में
जीवन की न जाने कितनी बातें
जीवन की अनगिनत यादें
जिन्हें कह पाना नामुमकिन
शब्दों में ढाल पाना भी मुश्किल
पर जिन्हें सह पाना भी कठिन होता है
जब तब कुलबुला उठती हैं
अन्तर की उन गहरी परतों के नीचे से
अपने होने का अहसास दिलाती रहती हैं
घुल जाती हैं अनुभूतियाँ बनकर
बूँद बूँद में रक्त की
कोई भी परत उन्हें ढक नहीं पाती
न अक़्ल की न वक़्त की
सिर्फ होता है उनके होने का अहसास

ooo

कैसे अलग करूँ

जब तब अतीत की यादें
मुझे उलझा लेती हैं
इतनी शिद्दत से
जैसे कंधे में उलझे बालों के गुच्छे
मैं निकल जाना चाहती हूँ
यादों की उन उलझनों से
बाहर आना चाहती हूँ
उलझनों के उन घेरों से
कंधे में उलझे बाल तो
काट कर भी अलग किये जा सकते हैं
पर यादों की इन उलझी ग्रन्थियों को
अपने से कैसे अलग करूँ
क्या काटा जा सकता है खुद को
क्या इतने टुकड़ों में
बाँटा जा सकता है खुद को
उठते रहते हैं मन में हज़ारों सवाल
फिर उलझा लेते हैं मुझे उलझनों में
जैसे कंधे में उलझे हुये बालों के गुच्छे

मुझे निहार लिया

कभी फूल सा सहलाया
कभी आग सा जलाया
फिर कभी
ओस की नन्ही बूँदों सा पुचकार लिया
कभी आँख चुरा ली
कभी निगाह गिरा ली
फिर कभी
नेह भरी आवाज़ से पुकार लिया
कभी लगा मेरा कोई अस्तित्व नहीं
कभी लगा कोई महत्व भी नहीं
फिर क्यों कभी
आँखों मं समग्र दृष्टि का स्नेह भरकर
तुमने मुझे निहार लिया

ooo

बह रहा जीवन

मोम सा गल-गल कर रह रहा जीवन
आग सा जल-जल कर रह रहा जीवन
अनगिनत दर्द समेटे मन में
पानी बन-बन कर बह रहा जीवन
सुलग रहा सुलगती लकड़ी के धुएँ सा
अन्दर ही अन्दर दह रहा जीवन

सागर की चंचल लहरों सा
पल-पल कभी मचलता जीवन
ठोकर खा कर न गिर जाये
पग-पग कभी सँभलता जीवन
अनजाने भय से भयभीत हुआ
भयत्रस्त कभी दहलता जीवन

आशा की इक किरण देख कर
क्षण में कभी बहलता जीवन
सुख के इक पल की आशा में
कितने दर्द निगलता जीवन
बनकर माटी की मूरत सा
बर्फ सदृश्य पिघलता जीवन

ooo

क्या करें हम ज़िक्र

क्या करें हम ज़िक्र तुमसे दर्द का
उठ रहा तूफान ग़म की गर्द का
क्या है मुश्किल और क्या आसान है
हर तरफ तूफान ही तूफान है
तू क्यों मेरे दर्द से अनजान है
दिल की दिल से क्या नहीं पहचान है
कुछ पता है तुमको मेरे मर्ज़ का
क्या करें हम ज़िक्र तुमसे दर्द का

कोई दिल के पास आ जाता है क्यूँ
धीरे-धीरे दिल में बस जाता है क्यूँ
फिर अचानक से बदल जाता है क्यूँ
क़समें वादे भूल वो जाता है क्यूँ
पूछना है प्रश्न तुमसे सर्द सा
क्या करें हम ज़िक्र तुमसे दर्द का

ज़िन्दगी का गर यही है क़ायदा
फिर गिला करने से भी क्या फायदा
सब गिले शिकवे भुला हम चल दिये
आखिरी पल जानकर हम हँस लिये
लो चुकाया कर्ज़ अपने फर्ज़ का
क्या करें हम ज़िक्र तुमसे दर्द का

ooo

उम्मीद का दामन

हम ज़िन्दगी में ज़िन्दगी ढूँढा किये
हम ज़िन्दगी से ज़िन्दगी लूटा किये

तारीकियों में रौशनी शायद कहीं मिले
यूँ अँधेरे दिल में हम घूमा किये

कोई बहलाये हमें मुमकिन नहीं
ज़ख़्म अपने खुद ही हम चूमा किये

खण्डहरों में हम न खो जायें कहीं
हम जलाते ही रहे उनमें दिये

घाव दिल के रोज़ सी लेते हैं हम
पर कसक उठती जियें किसके लिये

डगमगा जाते क़दम फिर भी कभी
लगता जैसे हैं नशे में बिन पिये

थाम कर उम्मीद का दामन 'विमल'
हम ज़िन्दगी की डोर पर झूला किये

○○○

दिल में कुछ रंग नये

दिल में कुछ रंग नये भर लें हम
भूल जायेंगे दर्द रंजो ग़म

काँटे तो आते रहते राहों में
उनसे दामन बचाके बढ़ लें हम

मंज़िलें चाहे कितनी दूर सही
अन न रुक पायेंगे ये बढ़ते क़दम

बहुत कुछ खोया तो कुछ पाया भी है
आस विश्वास को न छोड़ेंगे हम

जो किया अब तलक अच्छा ही किया
आओ कुछ और नया कर लें हम

छोटी सी ज़िन्दगी बड़े सपने
स्वप्न साकार आओ कर लें हम

हमसफर एक ही है काफ़ी 'विमल'
उसको सूरज बनाके चल लें हम

ooo

ज़िन्दगी, मौत और हम

ज़िन्दगी में याद करते मौत को पल-पल जो लोग
मौत आती सामने जब तो दहल जाते हैं क्यों
है अजब लुका छिपाई ज़िन्दगी और मौत में
एक का आना ही होता जाना दूजे के लिये
ज़िन्दगी और मौत का यह फलसफा समझेगा कौन
दोस्त और दुश्मन का यह रिश्ता सगा समझेगा कौन
ज़िन्दगी को ज़िन्दगी यूँ तो बहलाती रही
मौत की याद फिर भी उसको ज़िन्दगी भर सिहराती रही
ज़िन्दगी और मौत में बस फर्क़ इतना ही तो है
नींद खुल गई एक की दूजे को तब नींद आ गई
ज़िन्दगी भर ज़िन्दगी से दूर रहे
सोचा भी न था जब ज़िन्दगी जायेगी तो याद कितनी आयेगी
ज़िन्दगी को ज़िन्दगी बनाये रखने के लिये
ज़िन्दगी भर ज़िन्दगी को घिसते रहे
जानते थे मौत भी आयेगी एक दिन
मौत के इन्तज़ार में उम्र भर पिसते रहे
ज़िन्दगी और मौत दोनों को ही अपना समझ लें
एक के आते ही दूसरे को अलविदा कहना हमें

○○○

क्यों कोई

क्यों कोई सपनों में आये
क्यों आ जाये बिना बुलाये
हम तो उसको याद न करते
कोई भी फरियाद न करते
शिकवा गिला न करते कोई
क्यों फिर अँधियारी रातों में
अपना होना हमें जताये
क्यों कोई सपनों में आये
जाने अनजाने में शायद
दिल ने कभी करी नादानी
लेकिन बरसों बीत गये हैं
बीत गई है बात पुरानी
क्यों फिर एक नुकीला काँटा
चुपके से दिल में गड़ जाये
क्यों कोई सपनों में आये
क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं
कैसा ये क़िस्मत का लेखा
जिसको रोज़ सपनों में देखा
क्यों यादें बन हमें सताये
क्यों कोई सपनों में आये

ooo

अमृत वृष्टि से सरसाओ

अम्बर तक आवाज़ लगाकर ताकें स्वागत की दृष्टि से
आओ बादल सरसा जाओ धरती को अमृत वृष्टि से
कभी-कभी जब तुम न आते हम सब गाते मेघ मल्हार
लेकर विन प्रेम और आद पूजा करते हैं दिन रात
क्योंकि अगर तुम नहीं आये तो कहाँ से आयेगा धन-धान्य
लोग मरें भूख और अकाल से यह तो तुम्हें न होगा मान्य

आते रहना बरस-बरस तुम
अमृत रस बरसाते रहना
प्यासे प्राणी प्यासी धरती
हर जन कण सरसाते रहना
लेकिन एक विनय है तुमसे
जब भी आना प्यार से आना
मीठी सी फुहार बन आना
रिमझिम की बहार बन आना
जल से भरना नदियाँ नाले
लेकिन बाढ़ ल लेकर आना
कभी न एक जगह डट जाना
कभी न एक जगह फट जाना
जब-जब तुम घिर-घिर कर आना
प्रेम संदेशे लेकर आना
कभी न धरती को तरसाना
कभी न विरही मन को सताना
काले-काले बादल सबको
सदा देखना एक दृष्टि से
जब तक जीवन है सरसाना
धरती को अमृत वृष्टि से

तेरे भी ढंग निराले हैं
खुद ही देता खुद ही लेता
तेरे भी ढंग निराले हैं
तेरे ही दिये अँधेरे हैं
तेरे ही दिये उजाले हैं
मैं भँवर में जब फँसा
साहिल पे पहुँचाया मुझे
और दूसरे क्षण वहीं
लहरों से खिंचवाया मुझे
जब भी चाहा उड़ के मैं
आकाश से बातें करूँ
पंख मेरे काट कर
धरती पे पहुँचाया मुझे
दे दिया संकेत मुझको
लक्ष्य तक जाने का फिर
एक की झटके से मेरे
पथ से भटकाया मुझे
सब्ज़ बाग़ दिखाये ढेरों
फूल और फल से भरे
और फिर काँटों के झाड़ों
बीच अटकाया मुझे
बोलने को एक लम्बी जीभ देता
बोलने का हक़ है हमसे छीन लेता
मुझको उँगली पे नचाने के
तू जाने अजब बहाने हैं
खुद ही देता खुद ही लेता
तेरे भी ढंग निराले हैं

ooo

क्यों न मीत सबके बन जायें

कैसे-कैसे लोग अचानक मिलते इस जीवन में
कोई अमृत रस भर जाते भरते कोई विष जीवन में
कोई याद जब आ जायें तो हृदय गुनगुनाने है लगता
और किसी का अगर नाम लें मुँह में करेला रस घुलता
छोटे से इस जीवन में हम क्यों न गीत सबके बन जायें
थोड़ा-थोड़ा स्नेह बाँटकर क्यों न मीत सबके बन जायें
कोई सफर में भी मिल जाये तो भी भूल सके न हमको
करे याद जब अपने सफर को मन में शूल चुभें न उसको

जीवन की इस बगिया में भी जब-जब फूल खिलें यादों के
नेह भरे क्षण याद वो आयें कुछ मीठे-मीठे वादों के
बस में प्लेन में कोई रेल में कभी बाग की खुली सैर में
कभी किसी के जन्म दिवस पर या किसी अपने के विवाह में
कभी कहीं भी आते जाते कुछ साथी ऐसे मिल जाते
जिनसे नेह के बन जाते हैं पल भर में अटूट से नाते
आओ कर लें खुद से वादा महक भरें सबके जीवन में
भरें प्रेम से भरा सुधारस भरें अमृत सबके जीवन में

○○○

अपनों की सोच का अन्तर

शायद दुनिया की सबसे कठिन कोशिश है
अपनों को अपना बनाने की कोशिश
किसी अपरिचित को अनायास दी गई
एक छोटी सी खुशी
कभी-कभी उसे जीवन भर याद रहती है
उस खुशी को याद एक मुस्कुराहट के साथ
देने वाले के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है
एक भूले भटके पथिक को इंगित से राह दिखाने पर
वह नहीं भटकता दर बदर
धन्यवाद देता है सही राह दिखाने वाले को
किन्तु विधि की यह कैसी विडम्बना
या मानव के भाग्य की प्रवंचना
कि जो सबसे निकट होते हैं
उनकी अपेक्षाएँ इतनी विकट होती हैं
कि आयु पर्यन्त उन्हें खुश कर पाना
या उनसे कभी-कभी आदर प्यार के दो शब्द सुन पाना
उनसे दो पल मिल पाना भी दुर्लभ हो जाता है
उनके प्रति किया गया प्रत्येक सुकार्य
होय करते हाथ जलाने के बराबर हो जाता है
आयु के साथ दिलों का अन्तर बढ़ता जाता है
कारण
कभी धन कभी अहं और कहीं ईर्ष्या द्वेष
कभी पीढ़ियों का अन्तर
नई पुरानी सोच का अन्तर
काश ये सोच के अन्तर
अच्छी सोच के के साथ दूर किये जाते
तो किसी रिश्ते के साथ अन्याय न हो पाता
हर घर सुख शान्ति नेह भरे स्वर्ग का पर्याय बन जाता

ooo

काश दो लोग

कैसी होती है वो ज़िन्दगी
जब किसी अनजान अनदेखे धागे से जुड़े
दो लोग साथ-साथ रहते हुए भी
साथ-साथ नहीं होते
रेल की पटरियों की तरह
जो एक मंज़िल होते हुए भी
कभी मिल नहीं पातीं उनकी राहें भी
एक मंज़िल होते हुए भी
क्यों नहीं मिल पातीं
क्यों कोई अदृश्य छाया
उनके बीच फैलाकर अपनी माया
नदी के दो किनारों की तरह
उन्हें पास-पास नहीं आने देती
यह दुख किसी दिखावे का मोहताज नहीं होता
क्योंकि यह दुख एक ऐसी कुण्ठा के साथ है जीता
जिसे व्यक्त नहीं कर पाते जीने वाले
जिसे जीते हैं घुट-घुट कर ज़हर पीने वाले
काश ऐसा जीवन जीने वाले सीख ले पाते
समानान्तर चलने वाली, लक्ष्य तक पहुँचाने वाली
रेल की पटरियों से या नदी के उन दो किनारों से
जो न मिलकर भी
अपने बीच बहते निर्मल जल से खुद को मिलाकर
संसार का कल्याण करते हैं
काश दो लोग अपने बीच
निर्मल पावन जलधारा बहाकर
उसे जोड़ लें
अपने जीवन को एक नया सुखद मोड़ दें

ooo

वक़्त की करवटें और चेहरे की सलवटें

वक़्त बदलता रहा करवटें
बढ़ती रहीं चेहरे की सलवटें
वक़्त खिसकता रहा
ज़िन्दगी सिसकती रही
किस-किसने कितना सहा
किसने किसको क्या-क्या कहा
अनिर्णित बहसें चलती रहीं
सुख दुख समय-समय पर
देते रहे आहटें
वक़्त भी देता रहा
बीच-बीच में राहतें
कोई कुछ कर न पाया कोई भी बच न पाया
सबने अपना-अपना कर्ज़ वसूला या चुकाया
सुख दुख झेल के यूँ ही सफर चलता रहता है
साल दर साल
मानव रहता है कभी खुशहाल कभी बदहाल
किसी का कोई भी हो हाल वक़्त चलता रहता है अपनी चाल
वक़्त की सोच को न कोई समझ पाता है न रोक पाता है
वक़्त पूरी करता है कभी चाहतें देता है कभी कराहटें
चेहरे पर लिखी इबारतें ही बता सकती हैं उसकी लिखावटें
सुख दुख की लकीरें लिखती रहती हैं
चेहरे की सलवटें
हर सलवट बताती है
वक़्त ने कैसे-कैसे बदलीं करवटें

ooo

मौत सिर्फ़ मौत है

ज़िन्दगी के एक सच से पहचान कराती है मौत
मौत तो मौत है न हिन्दू न मुसलमान है मौत
एक सच जिससे जानबूझ कर रहता है अनजान
ज़िन्दगी भर जिसे समझ नहीं पाता इन्सान
नहीं देख पाता कि सबके खून का एक ही रंग है लाल
मौत ही करवाती है इस सत्य से पहचान
जब धर्म जाति के दंगों में मृत या घायलों का खून
या बुद्धिभ्रष्ट आतंकवादियों द्वारा मारे गये निर्दोषों का खून
या कभी उनका अपना खून
सड़क पर बह रहा होता है जिसे देखकर हर इन्सान रोता है
पल भर के लिये हर सहृदय को मौत के सच से मिला देता है
तब न कोई आतंकवादी न धर्म का ठेकेदार
न ऊँची नीची जाति के तथाकथित दावेदार
पहचान पाता है कि सड़क पर बहने वाला खून
हिन्दू मुसलमान सिक्ख ईसाई देशी विदेशी परदेसी किसका है
सड़क पर पड़ी हर लाश में से सिर्फ लाल रंग का खून बहता है
हर शख़्स को सिर्फ एक दर्द का अहसास कराती है मौत
एक पल के लिये सबको सिर्फ एक इन्सान बना देती है मौत
मौत का फलसफा बड़ा पुराना है
हर पैदा होने वाले के पास इसे एक दिन आना है
मौत तो सिर्फ मौत है न देवता न शैतान है मौत
जन्म से मौत तक इन्सान का साथ निभाती है मौत
एक पल के लिये सबको इन्सान बना देती है मौत
ज़िन्दगी के एक बड़े सच से पहचान कराती है मौत

ooo

मन के ख़ामोश पंछी

कभी-कभी रिश्तों में ऐसा खिंचाव आ जाता है
जो मानव को कुदरत की अनमोल भेंट
पारस्परिक स्नेह, आदर, श्रद्धा, प्रेम से
वंचित करने का प्रयास करने लगता है
कभी-कभी लोग साथ रहते हुए भी
इस खिंचाव को
रिश्ते के अपने आप में सिमटते जाने के
अहसास तक को महसूस नहीं कर पाते
रिश्तों का यह खिंचाव
टूटने की कगार तक आये
इससे पहले ही मन के आँगन में छिपे
प्यार के मुरझाते पौधे को
बड़े यत्न से समय व मतभेदों की
आँधियों के थपेड़ों से बचा लो
उन्हें विश्वास और स्नेह के जल से सींचकर
दिल के तारों को पास-पास खींचकर
मिला दो और मुरझाये पौधे
स्नेह रूपी अमृत जल से सिंचित पौधे
लहलहा उठेंगे
मन के आँगन के ख़ामोश पंछी
एक बार फिर चहचहा उठेंगे

ooo

स्मृतियों में क़ैद कहानियाँ

स्मृतियों में क़ैद कहानियाँ
दिन भर दिल के हर कोने को
कुरेद-कुरेद कर उनमें छुपती रहती हैं
एक-एक स्मृतिकण को दाने की तरह चुगती रहती हैं
जब तब मस्तिष्क में घर बनाती रहती हैं
हर दम किसी भूली-बिसरी कहानी की याद दिलाती रहती हैं
रात होते ही ये कहानियाँ आँखों में आ जाती हैं
दिल और दिमाग़ से निकल कर सपने सजाने आ जाती हैं
एक-एक कहानी नित नूतन क्लेवर लेकर आती है
कभी हँसाती है कभी रुलाती है
सपनों से जाग कर मैं उन्हें बुलाती हूँ
आओ न मेरे पास कहाँ छुप गईं
मुझे बेचैन कर क्यों चुप हो गईं
तब ये अतीत के चलचित्र आ जाते हैं सामने
दिन भर मुझे सताने
साथ लेकर फीकी धूमिल धूल की परतों में लिपटी
या रंगीन रेशमी सलवटों में लिपटी निशानियाँ
मैं कभी इनको भूलना चाहती हूँ
यूँ खेलती रहती हैं मुझसे
मेरी साँसों में बसने वाले
खट्टे-मीठे अहसासों वाली
ये स्मृति में क़ैद कहानियाँ

ooo

धूल की परतों के नीचे

मेरे बन्धु!
सबके हिस्से की खुशियाँ सबमें बाँट दो
सबसे कहो
सब अपने-अपने हिस्से की खुशियाँ
प्रेम प्यार से छाँट लो
धूल की परतों के नीचे क्या-क्या छुपा है
अतीत के बरसों में क्या-क्या जा चुका है
खुशी और ग़म के रिश्ते
बनते बिगड़ते रहते हैं
धूल के कण-कण में
अतीत के पल-पल में
हम न जाने क्या-क्या ढूँढते रहते हैं
सुख-दुख कभी कहना कभी सहना
आँखों के आँसू छुपाना
आँखों से आँसू बहना
ज़िन्दगी यूँ ही चलती रहती है
स्नेह के नाते जोड़कर
नफ़रत के काँटे काट दो
सबके हिस्से की खुशियाँ
सबमें बाँट दो

ooo

कैसी हैं ये हैरानियाँ

कैसी हैं ये हैरानियाँ
जो छुप गईं आकर दिल में
बनकर परेशानियाँ
यूँ तो ये दिल बहुत बड़ा है
भला बुरा कुछ न समझे
अपनी बात पर ही अड़ा है
सबकी बातें सुन-सुनकर समेट लेता है अपने मन में
सबके सुख दुख लपेट लेता है अपने जीवन में
कैसी-कैसी ये बातें जो बन गईं कहानियाँ
कभी-कभी होय करते हाथ जल जाते हैं
छोटी-छोटी बातों के फसाने बन जाते हैं
दिल समझ नहीं पाता मेरा क्या कुसूर है
कुछ न कुछ मुझमें ही कोई कमी ज़रूर है
कैसे फूलों की चाह में मिल गईं वीरानियाँ
फिर भी ज़िन्दगी में
सिर्फ नहीं है निराशा
हर निराशा के पीछे
छिपी होती है एक आशा
जैसे अँधेरा होता है बेहद काला
पर अँधेरे के बाद ही आता है उजाला
ज़िन्दगी में बहुत से
अच्छे लोग भी मिल जाते हैं
दिल में रह जाती हैं
जिनकी निशानियाँ
कैसी हैं ये हैरानियाँ
कैसी हैं ये परेशानियाँ
जो बच गईं कहानियाँ

ooo

सबका मालिक साईं

बड़े-बड़े नेता करें बड़े-बड़े कुछ काम
छोटे लोगों के सदा होते दाता राम
कुर्सी अपनी छोड़ के कैसे निकलें सा'ब
खाली कुर्सी देख के कोई न ले दाब
जब बाहर निकलें नहीं कैसे होंगे काम
छोटे लोगों के भैया काम करेंगे राम
जनता के दुख दर्द का कैसे रखें ख्याल
पहले तो रखना उन्हें अपने घर का ख्याल
वोट तो उनको मिल चुके मिल गई उन्हें विजय
बैठें जमकर सीट पर ए.सी. में निर्भय
रक्षक पहरा दे रहे नहीं है डर का काम
अपने घर में शेष हैं अभी बहुत से काम
पाँच मंज़िला घर बने सबसे पहला काम
अन्दर बाहर सजावटें फूलों की क्यारी
उस घर में हो जायेगी दुनिया ही न्यारी
भाई बन्धु गरीब जो उनका रखना मान
जब तक बैठा सीट पर कर दूँ कुछ कल्याण
बेटी बेटों के लिये शेष बहुत से फर्ज़
धन की कमी न होगी अब लेना पड़ेगा न कर्ज़
अच्छे कॉलेज स्कूलों में हो जायेगी पढ़ाई
जब तक कुर्सी पास है कोई नहीं लड़ाई
दान सदा मिलता रहे मेरे घर को भाई
देश का राखा राम है सबका मालिक साईं

ooo

प्रकृति खेल रही थी

काले-काले बादल नभ में हाथी जैसे झूम रहे थे
जल से भारी होकर झुककर धरती का मुख चूम रहे थे

काली बदरिया घिरने लगी थी मौसम था हो गया सुहाना
कोयल, मोर और दादुर ने शूरू कर दिया गाना गाना

घूम-घूमकर नभ में बादल करने लगे अपनी मनमानी
सबने समझ लिया बस अब तो बरसा पानी-बरसा पानी

तभी अचानक बूढ़े सूरज बाबा को एक चुहल सी सूझी
तुम्हीं कहो कितने युग बीते किसने उनके मन की बूझी

किया आँख से एक इशारा किरण एक झाँकी
और अचानक आसमान की छटा बनी बाँकी

थोड़ा-थोड़ा रंग बदलने लगा बादलों का
बंद हुआ झुक-झुक के झूमना मस्त बादलों का

आने लगे नये कुछ बादल लेकर अपने रंग
रंग-बिरंगे आसमान को देख हुए सब दंग

श्वेत-श्याम, पीले और गुलाबी बादल घूमें अम्बर में
कहीं गुलाबी पहने राधा कहीं कृष्ण पीताम्बर में

आसमान की छवि देखकर जनगण सारे झूम रहे थे
प्रकृति खेल रही थी रंग सारे इठलाते घूम रहे थे

ooo

चुनता ज़मीर को

पैसा तो मिला पर
ज़मीर भी बिक गया
ये कैसा गुनाह जानते बूझते
मुझसे हो गया
कुछ भी तो मिला नहीं
सबकुछ खो गया पर
सब जाने के बाद आज
आत्मा से साक्षात्कार हो गया
आज पहली बार मैं
अपनी ही नज़रों में गिर गया
काश यह ज्ञान मुझे
पैसे का लालच करने से
पहले मिल गया होता
तो आज मैं आत्माराम के आगे
सिर पकड़ कर न रोता
तब मैं पैसे और ज़मीर के बीच
चुनता ज़मीर को
सिर ऊँचा करके
सराहता तक़दीर को

ooo

मन की गाँठें खोलो

क्यों उदास हो जाता है मन देख के दुनियादारी
क्यों दुनियादारी में लगा देते हम ताक़त सारी
दुनिया दिखावे से बढ़कर भी होते ढेरों काम
हम क्यों रोज़ कमाना चाहें कोई झूठा नाम
जब अपना विश्वास टूटता दिल को लगती ठेस
क्या विश्वासघात से भी बढ़कर होता कोई क्लेश
लेकिन कभी-कभी हमसे भी होता यह आघात
जाने अनजाने हम भी दे जाते यह सौगात
इसीलिये दी सीख बड़ों ने मन की गाँठें खोलो
जब भी बोलो सोच के बोलो, पहले तोलो फिर बोलो

न उदास हो देख के दुनिया
हमसे ही तो बनती दुनिया
हर प्राणी जब ठीक रहेगा
स्वर्ग सदृश बन जायेगी दुनिया
स्नहे, प्रेम, हमदर्दी बाँटो
लगेगी सारी दुनिया प्यारी
किसी का मन फिर दुखी न होगा
न होगी कोई दुनियादारी

ooo

कर दो ख़ुद को ही वसीयत

दिल को भी न हो ख़बर
रोने की जब हो ज़रूरत
वरना खुद दिल ही कहेगा
रोने की क्या थी ज़रूरत
आँखों से आँसू भी न निकलें
ज़रा ये ध्यान रखना
वरना आँखें देखकर
हो जायेगी फज़ीहत
रोना हो जितना रो लो
रातों की तारीकियों में
एक टूटे दिल ने दी थी
दूसरे को ये नसीहत
पूजा करने कहाँ जाओगे
खुद ही कर लो अपनी अक़ीदत
मुसीबत से बच पाना
आसान नहीं है
जितनी दूर करोगे
बढ़ेगी उतनी ही मुसीबत
ग़म छुपाना खुद से भी
होता है ज़रूरी मेरे दोस्त
सारे ग़म खुद से छुपाकर
कर दो खुद को ही वसीयत

ooo

नफ़रतों के रिश्ते

नफ़रतों के रिश्ते बड़े गहरे होते हैं
इन पर न कोई बन्धन न कोई पहरे होते हैं
प्रेम का रिश्ता छिपा-छिपाकर दर्शाया जाता है
नफ़रत का रिश्ता दिखा-दिखाकर दिखाया जाता है
प्रेम के रिश्ते धीरे-धीरे सीढ़ी दर सीढ़ी पनपते हैं
नफ़रतों के बीज पीढ़ी दर पीढ़ी सुलगते हैं
इस सुलगती आग में मानव के रक्त सम्बन्ध भी जल जाते हैं
नाखूनों से माँस जुदा नहीं होता जैसे वाक्य बर्फ़ से गल जाते हैं
आज के स्वार्थ और लालच से भरे दिलों के लिये
हर रिश्ता पल भर में नफ़रत के रिश्तों में बदल जाता है
प्रेम के रिश्ते का एक बूँद खून नफ़रत की
सौ बूँदों में बदल जाता है
लेकिन बन्धु नफ़रतों की नींव पर बने महल
ऐसे गिरते हैं कि इन्सान उनमें दबकर रह जाता है
उस नींव पर लगा हुआ घृणा द्वेष का ग्रहण
इन्सान को सदैव के लिये डस जाता है
तो बन्धु ऐसे महल की नींव क्यों डाली जाये
क्यों न नफ़रत महल की जगर प्रेमभवन की नींव डाली जाये
जिसमें रहने वाले मिलजुल कर रहें सुख शान्ति से
पीढ़ी दर पीढ़ी न ग्रस्त रहें नफ़रत की भ्रान्ति से
प्रेम के रिश्तों में जीवन पथ का लक्ष्य होता है
स्नेह की डोरियों से बँधी नैया का साहिल भी होता है

ooo

हालात मेरे देश के

हालात मेरे देश के बड़ी तेज़ी से बदल रहे हैं
यह तो तरक़्क़ी की निशानी है
यह सोचकर हम बहल रहे हैं
रोज़ ऊँच-नीच के छुआछूत के
अमीर-ग़रीब के ज़ात-पात के
भाषाओं के आशा निराशाओं के
बढ़ती लालच के बढ़ती इच्छाओं के
अपने-अपने भगवान को बचाने के लिये
धर्मान्धता का प्रदर्शन
क्या भगवान को भी बचाना पड़ता है
धर्म के प्रति यह कैसा अन्धा आकर्षण
नारे लगते हैं अलग-अलग राज्यों की माँग के
लोगों में ये कैसे संस्कार जाग रहे हैं उन्माद के
सबको चिन्ता है अपनी नाक की
न अपने ध्वज की न देश की नाक की
लोगों के दिलों में कुण्ठाओं के बुलबुले उठ रहे हैं
जो आतंकवाद के रूप में पक-पक कर फूट रहे हैं
आतंकवाद की जड़ को समझने का प्रयास करो
जड़ को समाप्त करके दिल दहलाने वाले झगड़े समाप्त करके
तरक़्क़ी और खुशियों से भरे प्रेम महल का शिलान्यास करो
अगर अपना आत्म-सम्मान बचाना है
तो पहले आत्म सुधार करो
प्रेम, स्नेह, अपनत्व का
सच्चे दिल से प्रचार करो

जब-जब आपसी ईर्ष्या, द्वेष के शोले भड़कते हैं
आधुनिक राजाओं के अनुसार
रसोई में चार बर्तन होते हैं तो खड़कते हैं
इन झूठे दिलासों पर विश्वास करना छोड़ दो
अपना रुख सच्चे स्नेह की तरफ मोड़ दो
जब गणतंत्र के सारे गण एकजुट होकर रहेंगे
तभी देश के शासन-तंत्र सहज होकर चलेंगे
रसोई के बर्तन को ठीक से सहेज कर रखो
कभी आपस में नहीं टकरायेंगे
देश के नागरिकों में स्नेह के बीज बो दो
तब वे एक दूसरे से नहीं घबरायेंगे
तभी देश के हालात सुधरेंगे
तिरंगे झण्डे अम्बर तक लहरायेंगे
जब देश का नागरिक नादान रहीं रहेगा
तभी हमारा देश महान बनेगा
मिट जायेगा वो गरल जो हम पी रहे हैं
जीवन हो जायेगा सरल जो हम जी रहे हैं
तब हमें लगेगा देश के हालात नवल हो रहे हैं
जागेगा विश्वास देश के हालात धवल हो रहे हैं

ooo

ज़िन्दगी ठीक है तू जैसी है

ज़िन्दगी तुझसे शिकायतें तो बहुत हैं हमको
लेकिन इतनी भी नहीं कि तुझसे विदा ले लें हम

ज़िन्दगी तेरी इनायतें भी बहुत हैं हम पर
लेकिन इतनी भी नहीं कि शिकायत न करें हम

कहते हैं लोग ख़ुदा की देन तुझे
फिर तो शिकायत भी करेंगे उसी से हम

ये कैसी ज़िन्दगी ख़ुदा ने दी है हमको
ये कैसी इनायत है पूछेंगे उसी से हम

हम तो मामूली इन्सान हैं
पर तू जो करता है ठीक ही करता है

इसलिये ये अब से हमारा ईमान है
तुझसे कोई अदावत करेंगे न हम

पर ख़ुदा से तो शिकायत करनी नहीं होती
ऐसा सुनते आये हैं बुज़ुर्गों से हम

ज़िन्दगी ठीक है तू जैसी भी है अच्छी है
अब कभी तुझको क़यामत कहेंगे न हम

ooo

चिन्ता से दिल को भरो नहीं

कुछ लोग कहेंगे क्या बन्धु तुम इसकी चिन्ता करो नहीं
कल क्या होगा कब क्या होगा ऐसी सोचों से डरो नहीं
पल-पल जीवन का मूल्यवान
क्यों सोच-सोचकर गँवा रहे
हर पल कुछ ऐसा काम करो
अच्छी यादें जो बना रहे
जो बीत गया वो बीत गया
उन यादों में क्यों डूब रहे
अब आज करो कुछ ऐसा जो
सुन्दर अतीत बन सदा रहे
लोगों की बातों पर न जाओ
लोगों का काम तो कहना है
तुम सिर्फ करो जो दिल कहता
क्योंकि दिल को सब सहना है
दिल से कहना ऐसा न करे
जो अपनी नज़र में गिर जाओ
किसी स्वार्थ या लालच में आकर
कुछ काम ग़लत नहीं करना है
दुनिया में रहना बड़ा कठिन
पग-पग पर आती है बाधा
कोई भी साथ न दे फिर भी
बाधाओं से तुम डरो नहीं
जीवन में निराशा कुंठा या शत्रु हर रोज़ मिला करते
विश्वास करो खुद पर प्रभु पर चिन्ता से दिल को भरो नहीं
कुछ लोग कहेंगे क्या बन्धु तुम इसकी चिन्ता करो नहीं
कल क्या होगा कब क्या होगा ऐसी सोचों से डरो नहीं

ooo

जीवन मूल्य

जीवन के मापदण्ड भी चकित करते हैं
इनकी कसौटी को कसना
इनको पग-पग पर परखना
इन पर चलते हुए अपनी राहें रचना
कभी अबाध्य गति से निकल जाना
कभी हर क़दम पर अटकना
सब कितना विस्मित करते हैं
जीवन मूल्य -
कुछ बहुमूल्य होते हैं
कुछ अमूल्य होते हैं
और कुछ निर्मूल्य होते हैं
कौन किसको चुनता है
किसके साथ भाग्य को बुनता है
किस मूल्य पर स्थिर रहता है
ये सब मानव की मनःस्थिति को
उसकी नैतिकता को
उसकी आध्यात्मिकता को
उसकी भौतिकता को प्रदर्शित करते हैं
जीवन मूल्यों के सही मापदण्ड ही
मानव में उच्च विचार आमन्त्रित करते हैं
उसके जीवन को नियन्त्रित करते हैं

ooo

गूँज रही सारी अमराई

जब तितली ने नृत्य दिखाया
थिरक उठी मेरी अमराई
जब भँवरे ने गाना गाया
लगा बजी जैसे शहनाई
खिले-खिले फूलों को तक कर
मन ही मन कलियाँ मुस्काईं
आज खिले ये फूल हँस रहे
खिलना है कल हमको भाई
हरी घास भी पड़ी मस्त है
सबको है ठंडक पहुँचाई
बड़े वृक्ष भी झूम उठे जब
हवा सरर-सर उन पर आई
तितली नाच रही फूलों पर
कोयल ने भी कूक लगाई
प्रकृति सुन्दरी अपने राज को
देखे गर्व से है इठलाई
चमक-चमक कर तुहिन कणों ने
मोती सी आभा बिखराई
बैठ पेड़ कर खगवृन्दों ने
साथी को आवाज़ लगाई
कुहू-कुहू काँ-काँ चूँ-चूँ से
गूँज रही सारी अमराई

ooo

सबकी यही कहानी है

मन ने कहा अपनी कविता से सबके मन को खूब रिझाऊँ
अपने अन्तर के सारे सुख-दुख काग़ज़ पर लिखती जाऊँ
अपने जीवन के सारे अनुभव
संवेदनायें, वेदनायें, अनुभूतियाँ
मिले कौन से रंज, दर्द, ग़म
कैसे-कैसे व्यंग और सहानुभूतियाँ
दिल के कोनों में छुपा अतीत
वो सारा समय जो गया बीत
वो अच्छे क्षण जो कभी जिये
सुख के अमृत जो कभी पिये
जिनसे जीवन को ज्योति मिली
हैं आज भी जलते मन में दिये
चाहे कुछ ग़ैर बने अपने
कुछ बुरे सहारे उस पल में
जीवन के रंग निराले हैं
जीवन के ढंग भी हैं कैसे
ऐसे ही सबके जीवन में
सुख-दुख के क्षण आते रहते
अँधियारे उजियारे सब दिन
आते रहते जाते रहते
मैंने चाहा मेरी कविता पढ़कर सब कहें मेरी ज़िन्दगानी है
इन कविताओं में छुपी हुई मेरे जीवन की कहानी है
हम सबका जीवन एक बन्धु हम सबकी यही कहानी है
वैसे जीवन में होता क्या जीवन तो होता फ़ानी है
बस यही सोच कुछ लिख डाला सबके मन की सबको दिखलाऊँ
कुछ उनके कुछ अपने मन की बातें मैं काग़ज़ पर लिखती जाऊँ

ooo

साथ मिला वीरानों का

घुट-घुट कर रह गई तमन्ना
खून हुआ अरमानों का
कोई तो देखो आकर
क्या हाल हुआ दीवानों का

जल-जल कर शमां बुलाती रही
वो आ-आकर कुर्बान हुए
क्या प्यार का बदला मिला उन्हें
क्या हाल हुआ परवानों का

अपनों से नाता तोड़ के वो
दुनिया में ढूँढने अपना चले
पर दुनिया से भी दग़ा मिली
क्या हाल हुआ बेगानों का

सब तरफ ठोकरें जब खाईं
इक नई राह पर चल निकले
भीड़ों का अकेलापन छोड़ा
रस्ता पकड़ा सुनसानों का

जब कहीं न कोई अपना था
सारा जग झूठा सपना था
तब एक सहारा मिला उन्हें
तब साथ मिला वीरानों का

ooo

ढूँढता हूँ खुद में खुद को

भीड़ में कितना अकेला खुद को हम हैं पा रहे
चल रही है भीड़ सारी हम भी चलते जा रहे

कौन आगे कौन पीछे कौन दायें-बायें है
क़दम सबके बढ़ रहे हैं हम भी बढ़ते जा रहे

इस समय दिल भी है खाली और खाली दिमाग़ है
कोई दर्दो रंजो ग़म न इस समय हैं सता रहे

ज़िन्दगी की राह में कैसे मुक़ाम हैं आ रहे
जब न कोई साथ है फिर भी हज़ारों जा रहे

न कोई चाहत है दिल में आस भी कोई नहीं
ये भी हम न जानते कि हम कहाँ हैं जा रहे

कौन से पल हम कहाँ होंगे पता इसका नहीं
ये पता हमको नहीं हम किस दिशा को जा रहे

ज़िन्दगी की राह में कितना अकेला आदमी
ढूँढता हूँ खुद में खुद को मैं तो फिर भी छुपा रहे

न कहीं राहें न मंज़िल एक रेला भीड़ का
कौन पहुँचेगा कहाँ इसका भी कुछ न पता रहे

ज़िन्दगी की राहों में इक जुनून में चलते रहे
खुद को काँधे पर लिये हम खुद को ढूँढने जा रहे

ooo

अकेलेपन का अहसास

अकेला होना और अकेलेपन का अहसास होना
दो अलग-अलग बातें हैं
चाहे ये दो नाम प्रायः साथ-साथ आते हैं
लेकिन अकेलापन इन्सान को अधिक मज़बूत
अधिक आत्मनिर्भर बनाता है
जबकि अकेलेपन का अहसास
भयभीत और कमज़ोर बनाता है
भीड़ में भी इन्सान अकेला होता है
फिर भी वह अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ
सिर उठाकर चल रहा होता है
अपने अस्तित्व अपने व्यक्तित्व की सम्पूर्णता को बनाये रखने के लिये
खुद को दूसरों से अलग दिखाने के लिय अपने चारों तरफ
एक कोशिश के साथ अकेलेपन का एक घेरा खींच लेता है
फिर भी वह भीड़ का एक हिस्सा होता है
लेकिन भावनात्मक रूप से शून्य व्यक्ति
घेर लेते हैं स्वयं को बेचारगी, बेगानगी
भावहीनता और शून्यता की स्थिति में
ले आते हैं स्वयं को भयावह मानसिकता, असंतुलन
आंतरिक शून्यता की परिस्थिति में
दूर करने को अकेलेपन का अहसास
बाँध लो खुद को सृष्टिकर्ता की सृष्टि के आसपास
प्रकृति के उपहारों से नाता जोड़ लो
जीवन नैया की पतवार लहरों के भरोसे न छोड़कर
अपने हाथों में थाम कर अपनी ओर मोड़ लो
खुद से नाता जोड़कर चलो
आत्मा को परमात्मा से जोड़कर चलो

ooo

हम न देते हैं न लेते हैं 'दहेज़'

दहेज़ - कितना ललचाने वाला शब्द
जिसे बेटों के माता-पिता उनके पैदा होने के पहले से ही
दिल में संजोकर रखते हैं फिर कहीं आता है वो समय
जब बेटे को शिक्षा-दीक्षा, योग्यता एवं वेतन के आधार पर
शादी के बाज़ार में उसकी बोली लगती है
डॉक्टर, इंजीनियर, एम.बी.ए, व्यापारी, प्रोफेसर
तथा अन्य भी जितने व्यवसाय हैं उनके आधार पर
बेटे की क़ीमत आँक कर शादी बाज़ार में उसकी क़ीमत लगती है
तय होता है दहेज के दानव का रूप - कितना छोटा - कितना बड़ा
देखते हैं लड़के का रूप-रंग-आकार, कितना गँवार और कितना पढ़ा

यहाँ ध्यान यह देना है कि लड़के के बराबर पढ़ी लड़की की
कोई क़ीमत नहीं होती शादी के बाज़ार में
लड़की की पढ़ाई, पालन-पोषण पर हुए ख़र्च की
दुगनी क़ीमत वसूल की जाती है
लड़की तो बिन पैसे खर्च किये पढ़ जाती है
तो बात दहेज़ लेने-देने की चल रही है
एक ज़माना था दहेज़ देने वाला अपने घर में
और ट्रक भर-भरकर ले जाने वाला अपने घर में
बड़ी शान से दहेज़ के सामान की प्रदर्शनी लगाता था
वहाँ खड़ा व्यक्ति हर चीज़ के बारे में शान से बताता था

लड़की के माता-पिता ने क्या दिया, लड़के वाले क्या लाये
प्रदर्शनी देखने के बाद इसके खूब चर्चे होते थे
आगे हमें अपने बच्चों की शादियों में इससे अधिक लेना चाहिए
लड़कियों वाले परेशान होते थे कि हमें इससे अधिक देना पड़ेगा

लड़के वाले खुश होते, इस उदाहरण के बाद और अधिक मिलेगा
वक़्त बदला सरकारी मुनादी हुई, ''दहेज़ लेना और देना मना है''
पर सरकारी मुनादियों पर आजतक किसने अमल किया है
भगवान जब एक रास्ता बंद करता है तो दस खोल देता है
दहेज़ का बाज़ार आज भी शान से चलता है
दहेज़ का दानव और अधिक फूलता फलता है
बस दहेज़ लेने-देने के तरीक़े थोड़े बदल गए हैं
पहले दिखाकर लिया-दिया जाता था अब चुपके-चुपके हो गये हैं
दहेज़ पहले से अधिक बढ़ गया है
सरकारी आदेश का कितना अच्छा पालन हो रहा है
आजकल दूल्हा फेरे होते ही बिना कुछ लिये रवाना हो जाता है
लेकिन वास्तव में हर सिक्का दो पहलू रखता है
यहाँ दूसरे पहलू में बारात बिना कुछ लिये बहू को लेकर विदा हो गई
सारी बिरादरी लड़के वालों के बड़प्पन पर फ़िदा हो गई
पर पहले पहलू में टी.वी, फ्रीज़, वाशिंग मशीन, सोफासेट
डाइनिंग टेबल, ए.सी, रसोई घर का पूरा सेट
और गैस का चूल्हा, भला खाना नहीं पका तो खायेगा क्या दूल्हा
गैस नहीं होगी तो कैसे जलेगा उसके घरवालों का चूल्हा
सारी चीज़ें कई दिन पहले ही रवाना हो जाती हैं
किसी को कानों-कान और आँखों-आँख ख़बर नहीं होती है
लाखों की नक़दी पर तो किसी का नाम लिखा नहीं होता
वो धन चुपचाप एक घर से दूसरे घर में पहुँच है जाता
लेने वाला कहता है जो देना है
अपनी बेटी को दो हम दहेज़ नहीं लेते
देने वाला भी मान लेता है
जो दिया अपनी बेटी को दिया हम दहेज़ नहीं देते

प्रश्न है क्या लड़के वालों के यहाँ इससे पहले कुछ नहीं होता
गैस का चूल्हा, बर्तन, सोफा, टी.वी, फ्रीज़, कपड़ा धोने की मशीन
क्यों वह सबकुछ लड़की वालों से लेना चाहता है छीन
जब तक यह सब चलता रहेगा बेटी का पिता रोता रहेगा
बेटी न पैदा हो भगवान से यही प्रार्थना करतारहेगा
सरकार लाख आदेश दे, क़ानून बनाये, देश नहीं जागेगा
इसके लिये लोगों को खुद अपने आप को जगाना होगा
यह दहेज़ नाम का दानव समाप्त हो जाये
तो न बेटी का पिता कर्ज़दार जैसा आचरण करेगा
न समाज में बेटियों को बोझ माना जायेगा
न कन्याओं को जन्मे-अजन्मे मार दिया जायेगा
न लड़कियों को पिता का बोझ कम करने के लिये
आत्महत्या करनी पड़ेगी पिता का आत्मसम्मान बचाने के लिये
बहुओं पर दहेज़ के कारण अत्याचार न होगा
न उन्हें कम दहेज़ के नाम पर जलाया जायेगा
न ही लड़कों के रेट तय करने की ज़रूरत पड़ेगी
बाज़ार में उनकी भी बोली नहीं लगेगी
आइये जनाब डॉक्टर लड़का इस रेट पर बिकाऊ है
यह कोई नहीं देखता कि लड़की भी तो कमाऊ है
काश हमारे शब्दकोष में दहेज़ नाम का शब्द ही न होता
तो लोगों की आत्मा भी न बिक जाती
काश बेअी के पिता का शोषण करने वाले
बेटों के पिताओं का आत्मसम्मान जाग जाये
दहेज़ नाम का शब्द शब्दकोष और समाज से निकल जाये
कभी किसी को न याद आये यह स्वार्थी शब्द
उफ! 'दहेज़' कितना ललचाने वाला शब्द

ooo

ज़िन्दगी भर सुलग-सुलगकर

क्यों कभी इन्सान की ज़िन्दगी
बीत जाती है जलते बुझते
ऐसे दिये की तरह जो न जलता है न बुझता
जो सिर्फ उम्र भर है सुलगता
जिसमें सुलग-सुलगकर धुआँ उठता है रहता
ऐसे ही धीरे-धीरे इन्सान का जीवन
धुआँ बनकर उड़ता जाता है
लेकिन यह मूरत जिसे भगवान ने
अपने हाथों से तराश कर इस दुनिया में भेजा है
क्या इसलिये कि वह ज़िन्दगी भर सुलग-सुलगकर
अपने बनाने वाले को भी लज्जित करे
नहीं - इन्सान को अपनी ज़िन्दगी में से
धुआँ दूर करके उसे ज्योतित करना होगा
अपने कण्टकाकीर्ण मार्ग की
बाधाओं को दूर करके उसे पल्लवित करना होगा
अपने जीवन से अँधेरों को भगा कर
अपने जीवन को प्रकाशित करना होगा
उसे अपनी मंज़िल स्वयं ही प्राप्त करनी होगी
अपने मार्ग को स्वयं ही प्रशस्त करना होगा
उसे चुपचाप और लाचार बनकर
धीमे-धीमे सुलगना छोड़कर
दृढ़ इच्छाशक्ति एसं सशक्त भाव से आगे बढ़ना होगा
क्योंकि भगवान भी उनकी ही मदद करते हैं
जो अपनी मदद स्वयं करते हैं
इसी को कहते हैं ज़िन्दगी

ooo